ज्ञानामृत

निश्चय · प्रेम · सम्पूर्ण सहयोग

स्नेही बनो सहयोगी बनो

पवित्र बनो योगी बनो

अगस्त, 1989 वर्ष 25 ❋ अंक 2 मूल्य २/-

माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य शाखा राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाग द्वारा आयोजित परिचर्चा एवं राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए प्रो० एस० सम्पथ, अध्यक्ष, आर० ए० सी० सुरक्षा विभाग, भारत सरकार, दादी प्रकाशमणि, भ्राता आर० एस० गोइला, निदेशक, संचार विभाग तथा अन्य।

माउण्ट आबू में आयोजित उद्योग एवं व्यापारी वर्ग हेतु परिचर्चा एवं राजयोग शिविर का उद्घाटन करते हुए दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति, शिक्षाविद् एवं पूर्व सांसद, भ्राता भीकखूराम जैन, दादी प्रकाशमणि जी, अहमदाबाद के विख्यात उद्योगपति पद्मभूषण अमृतलाल मोदी तथा रिलाइन्स ग्रुप में विमल टैक्सटाइल्स के अध्यक्ष लाल भाई शाह

हुबली में प्रधानमंत्री राजीव गांधी के पधारने पर उनका स्वागत करते हुए ब्र. कु. सुनंदा बहन।

मोगां — भ्राता लाल कृष्ण अडवानी, अध्यक्ष भाजपा को ईश्वरीय उपहार भेंट करते हुए ब्र. कु. संजीवन बहन।

माउण्ट आबू — राजयोग शिविर में आयोजित परिचर्चा में मंच पर विराजमान हैं (बायें से) ब्र. कु. जगदीश चन्द्र, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत, भ्राता वी. डी. महतं, मंत्री, गुजरात सरकार ब्र. कु. गंगे तथा अन्य।

माउण्ट आबू — केशोद नगरपालिका के प्रमुख भ्राता आर. के. डुंबर तथा अन्य दादी प्रकाशमणि जी के साथ एक ग्रुप फोटो में।

बुरहानपुर सेवाकेन्द्र द्वारा गांव आमोदा में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सरपंच भ्राता लोखण्डे।

कुल्लू में नवनिर्मित 'राजयोग भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र. कु. हृदय मोहिनी जी,

हरिद्वार में आयोजित 'बाल व्यक्तित्व शिविर' में भाग लेने वाले बच्चे ब्र. कु. प्रेम बहन तथा अन्य ब्र. कु. बहनों के साथ एक ग्रुप फोटो में।

दरभंगा में नेत्रहीनों के एक समूह को ईश्वरीय सन्देश देने के पश्चात् ब्र. कु. अंजु ब्र. कु. अनीता एक ग्रुप फोटो में।

पचमढ़ी (म. प्र.) में आयोजित एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में प्रवचन करते हुए ब्र. कु. उषा बहिन साथ में ब्र. कु. रमेश जी तथा अन्य।

हुनसूर (मैसूर) सेवाकेन्द्र के ८ वें वार्षिकोत्सव समारोह में भ्राता मादेगौडा, पूर्व एम. एल. ए. का पुष्पगुच्छों से स्वागत करते हुए ब्र. कु. रमा बहन।

Regd No. 10563/65-D. (E)-70

माउण्ट आबू में आयोजित राजयोग शिविर में बहन अंजना कंवर, उपमहापौर, दिल्ली, गुजरात के मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी तथा अन्य राजनीतिज्ञ पधारे। वे वरिष्ठ ब्र. कु. भाई बहनों के साथ एक ग्रुप फोटो में।

गांधीनगर — ई. वि. वि. की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी से ज्ञान-वार्तालाप करते हुए भ्राता प्रबोध रावल, अध्यक्ष, गुजरात प्रदेश कांग्रेस समिति।

माउण्ट आबू — 'ज्ञानामृत' पत्रिका के रजतजयन्ति वर्ष के सुअवसर पर केक काटते हुए ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका, ई. वि. वि. तथा ब्र. कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत।

अम्बाला में 'राजयोग भवन' के शिलान्यास समारोह में मंच पर विराजमान हैं (बायें से) ब्र. कु. अचल, ब्र. कु. प्रेम बहन, भ्राता शिव प्रसाद, एम. एल. ए.; प्रो. आर. वी. शर्मा तथा ब्र. कु. अमीर चन्द।

अमृत – सूची

१. मेरे स्वपनों का स्वतंत्र भारत १
२. चले थे नर से नारायण बनने बन गए नारद (सम्पादकीय) २
३. परिवर्तन शक्ति ४
४. रक्षाबंधन में छिपा श्रेष्ठ भाव ५
५. संस्कृति, सभ्यता की समन्वय सेतु राखी ६
६. राखी बंधन – 'पवित्र बंधन' ७
७. सफ़र एक रात का ८
८. साहित्य की समस्याएं और समाधान ९
९. परमप्यारे शिव बाबा तथा अव्यक्त ब्रह्मा बाबा से मेरी रूहरिहान १२
१०. प्यारा राखी का त्योहार १३
११. वैज्ञानिकों तथा तकनीकज्ञों के लिये राज योग शिविर १४
१२. व्यापरियों एवं उद्योगपतियों के लिये राजयोग एवं परिचर्चा शिविर १५
१३. सचित्र समाचार १६
१४. सम्पूर्ण स्वास्थ्य परिचर्या एवं राजयोग शिविर १८
१५. संगठन की रक्षा करना ही स्वयं की रक्षा है १९
१६. विघ्नों का कारण – सूक्ष्म अपवित्रता २०
१७. ईश्वरीय साहित्य का महत्व २३
१८. राजयोगी डाक्टरों द्वारा स्वास्थ्य सेवा का कार्यक्रम २४
१९. आत्म दर्शन २८
२०. अनमोल ईश्वरीय महावाक्य ३२

मेरे सपनों का स्वतंत्र भारत

ब्र० कु० भावना,

"जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वो भारत देश है मेरा" किसी कवि के इन शब्दों में अपने हृदय की भावना के रंग मैं देख रही हूँ

जहाँ स्वर्णिम प्रभात की सुनहरी किरण हर दिल को प्रसन्नता से भरपूर कर देती हो, जहाँ की दोपहरी चाँदी बरसाने वाली हो और जहाँ की रात्रि सुहागिन सी झिलमिल सितारों की हँसी से सजी हुई हो वो देश मेरे स्वप्नों का भारत है। वहाँ भ्रष्टाचार, अनीति और शोषण का नाम निशान न होगा। स्व० जयप्रकाश जी ने कहा था–"यह समाज वर्ग भेद का है चापक और शोषित का है, दलित और पीड़ितों का है, भ्रष्टाचार और अनीति का है। यह समाज रहने लायक नहीं है। किसी ने सच कहा है कि जुल्म और लुंटक रिवाज को बदल डालो, इस समाज को बदल डालो।"

मैं तो ऐसा स्वप्न अपने भारत का देखती हूँ। जहाँ महात्मा गाँधी जी का स्वप्न साकार होते हुए नजर आये। जिसे सच्चा रामराज्य कहें, सतयुग कहें जो इशु के शब्दों में ईश्वर का बगीचा कहें। वह देश मेरे स्वप्नों का है।

मेरे भारत में हर चेहरे पर प्रसन्नता के गुलाब खिलेंगे। कोई चीज पैसे पर बिकेगी नहीं, हर चीज उपलब्ध होगी। न वर्ग भेद होगा न वर्ग विग्रह। अपार समृधि होगी। कोई चीज अप्राप्त नहीं देवताओं के खजाने में, यह उक्ति सार्थक हो जायेगी मेरे स्वप्नों के भारत में।

मैं तो ऐसा भविष्य मेरे भारत का देखती हूँ–जहाँ के मनुष्य देवता समान प्रसन्न हों। सम्पूर्ण पवित्र हों। जिनके चेहरे पर सदा प्रसन्नता और सुख का भाव, यौवन नम्र और महान हो, बुढ़ापा सदा आदरणीय और सन्तुष्ट हो। जहाँ हर बच्चे ईश्वर की सन्तान सदृश्य सदा स्नेही और आनन्दित हों।

मेरे स्वप्नों के भारत का गृहस्थ जीवन तो ल० न० समान (लक्ष्मी नारायण समान) एकता, सँवादिता तथा आत्मीय प्रेम भाव से कमल पुष्प समान सद्गुणों की सौरम्भ से नव-पल्लवित होगा। मेरे स्वप्नों के भारत में समृद्धि और प्रकृति दासी के रूप में सेवा करने के लिए तत्पर होगी। सोने की नगरी होगी मेरा भारत। खेतों में हरियाली झूम उठेगी। वृक्षों पर फल अमृत रस धारण करते होंगें। हर सुबह मधुर स्वर वाले पंछी की चह-चहट से हमारी पलकें खुलती होंगी। किसी कवि ने ऐसे भारत का स्वप्न देखा है–कि 'मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरा मोती' दूध घी की नदियाँ बहती होंगी–यह कहावत मेरे स्वप्न के भारत में साकार होगी। वहाँ के बच्चे देवी राजकुमार/कुमारी सरीखे बड़े मीठे और प्यारे दिखाई देंगे। उनकी हर सुबह माँ के मधुर स्वर के गीतों से मुस्कराती कलियों जैसी होगी।

"जहाँ का हर बालक एक श्रीकृष्ण है और हर बालिका एक श्री राधे है" वह मेरे स्वप्नों का भारत है।

वहाँ कोई रोग न होगा। न तो कोई बीमारी होगी। क्योंकि वहाँ कोई बाजारी बीमारी लाने वाली चीजें ही ना होगी। सब मेवा मिठाई दूध फल ही खायेंगे। सभी की काया कंचन समान होगी।

वहाँ तो सभी में रीयल्टी और रायल्टी होगी, सभी ईमानदार होंगे। न कभी झगड़े होंगे न गोरे न कालों की लड़ाईयाँ होंगी।

वहाँ एक राज्य, एक धर्म, एक मत, एक भाषा और एक ईश्वरीय कुल होगा। झिलमिल सितारों का आँगन होगा, स्वर्ग हमारा मन भावन होगा।

ऋषि मुनियों ने जिसे स्वर्ग कहा, कुरान ने जन्नत कहा, ईशु ने हेवन कहा और बहाई धर्म के धर्मस्थापक वहाउल्लाह ने जिसे बहिश्त कहा वही देश मेरे स्वप्नों का भारत है।

चले थे नर से नारायण बनने, बन गये नारद!

उक्ति प्रसिद्ध है कि ईश्वरीय विद्या के अध्ययन एवं अभ्यास से 'नर श्री नारायण बनता है और नारी श्री लक्ष्मी पद प्राप्त करती है।' दूसरे शब्दों में मनुष्य आध्यात्मिक पुरुषार्थ द्वारा दिव्य गुणों को धारण करते-करते देवता बन जाता है। परन्तु देखा गया है कि कई लोग लक्ष्य तो यही लेकर चलते हैं कि 'नर से नारायण' बनेंगे परन्तु वे बन जाते हैं—'नारद!' जी हां, वे 'नर से नारद' ही बने रहते हैं।

नारद के बारे में आपने प्राचीन साहित्य में पढ़ा होगा और नाटकों में भी देखा होगा अथवा लोक-कथाओं में भी सुना होगा कि वे जहां-तहां पहुंच जाते थे। चलते-फिरते वे खड़ताल बजाते हुए कहते थे—"भज मन नारायण-नारायण।" इस प्रकार नाम तो वे 'नारायण' का लेते थे परन्तु इधर की बात उधर और उधर की बात इधर बताकर वे लोगों में अनबन और झगड़ा पैदा करते फिरते थे। वे तिलक, चोटी, जनेऊ और खड़ांव, जिन्हें भक्त लोग धर्म के चिन्ह मानते हैं, उन 'धर्म-चिन्हों' को तो बाह्य रूप से धारण किए रहते थे परन्तु वे लोगों को सन्देश या समाचार ऐसा सुनाते थे कि लोग झगड़े या झंझट में पड़ जाते थे। नारद जी कहलाने को तो 'ब्रह्मा-पुत्र' ही थे परन्तु उनके 'रचनात्मक कार्य' अपने ही प्रकार के होते थे। लोग तो उनसे यही आशा करते थे कि वे कोई सन्देश लाये होंगे और कोई समाचार सुनायेंगे परन्तु प्रायः उनके सन्देश भी अटपटे होते और समाचार भी अजीब कि जिससे जीवन एक नई करवट लेकर एक नई मुसीबत में पड़ जाये। इसलिए नारद जी को 'घर-बार फिटाने वाला' और कोई ऐसी भावी बताने वाला माना गया है कि जो किसी एक-न-एक के लिए संकट की सूचक हो।

पुराणों और आख्यानों में नारद के विषय में यह भी उल्लेख मिलता है कि उसने क्रोध में आकर ब्रह्मा जी को भी 'लात मारी' और विष्णु जी के वक्षस्थल पर भी पाद-प्रहार किया! लिखा हुआ मिलता है कि विष्णु जी के वक्षस्थल पर तो उन्होंने इतने जोर से लात मारी कि उनके पांव का वहां स्थायी ही निशान पड़ गया और विष्णु जी की निशानी ही बन गया। कथाओं और आख्यानों में कहा गया है कि नारद जी ने कहा कि उन्होंने ब्रह्मा और विष्णु आदि की सहनशीलता, नम्रता और स्थिति की परीक्षा लेने के लिए ऐसा किया था। तो देख लीजिए कि नारद जी मुख से तो 'नारायण, नारायण' करते रहते थे और कहलाते भी ब्रह्मा-वत्स थे परन्तु वे 'भक्त' ही कहलाये, 'योगी' नहीं। वास्तव में वे तथाकथित 'ब्रह्मा-पुत्र' थे क्योंकि वास्तव में ब्रह्मा-पुत्र की न्यायीं शालीन, योग-युक्त और योगीजन-उचित कर्म नहीं करते थे। यदि 'लात मारना' या 'पद-प्रहार' करने को शाब्दिक अर्थ में न लेकर मुहावरे में समझा जाए तो इसका भाव यह होगा कि वे आदि देव और देव का भी निरादर करते थे; व्यावहारिक रूप से उनकी बात का भी तिरस्कार करते थे या उनको भी नहीं मानते थे।

अतः आज भी जो लोग ऐसे हैं कि नारायण.... नारायण..... रूप लक्ष्य का नाम तो लेते हैं परन्तु ब्रह्मा के श्रेष्ठ मत को, उनके उज्ज्वल जीवन के उदाहरण को तथा विष्णुजी के जीवन रूपी वक्ष में समाए दिव्य गुणों को भी 'लात-मारते', अर्थात् अमान्य मानते हैं, वे नारद ही हैं। भले ही वे 'ब्रह्माकुमार' बने हों, बाह्य रूप से धर्म के चिन्हों को भी धारण करते हों, बैज लगाकर बैजनाथ बनते हों, थैले में जन-सेवा के लिए लिट्रेचर रखते हों, लोगों को सन्देश भी सुनाते हों। परन्तु वे ऐसे समाचारों और सन्देशों को सुनाने में लगे रहते हैं जिनसे कि श्रोता के मन में दूसरों के प्रति अनबन पैदा हो और जो झगड़ों की बुनियाद बन जायें, वे 'नर से नारायण' बनने का लक्ष्य घोषित करते हुए भी केवल नाम लेवा हीं हैं, एक प्रकार का जाप करने वाले और भक्त ही हैं। वास्तव में वे चले थे नारायण बनने और बन गये हैं—नारद।

इस विषय में भी एक कथा है। कहते हैं कि एक बार उन्होंने भगवान् से प्रार्थना की। वे बोले—"प्रभु, लक्ष्मी का स्वयंवर है, अनेक देवता वहां उसका वरण करने की कामना से आयेंगे परन्तु, प्रभु, आप मुझे ऐसा वरदान दो कि लक्ष्मी जी वरमाला मेरे गले में डालें। कहते हैं कि लक्ष्मी जी स्वयंवर सभा में कई बार नारद जी के सामने से गुजरीं। नारद जी को हर बार यह विश्वास होता था कि अब की बार तो लक्ष्मी जी वरमाला उन्हीं के गले में डालेंगी परन्तु वे उनके सामने से आंख बचाकर, थोड़ा मुंह मोड़कर निकल जाती थीं। जब नारद जी आकर पहले पहल खड़े हुए थे तो उनको ख्याल था कि लक्ष्मी जी कहीं रुकेंगी ही नहीं बल्कि भागी-दौड़ी सीधी वहीं आकर ठहरेंगी जहां वे खड़े होंगे और वे उन्हीं के गले को अपनी वरमाला से सुशोभित करेंगी। परन्तु आखिर स्वयंवर की सभा समाप्त हुई और नारद जी जब निराश होकर लौट रहे थे तो उनके मन में ख्याल आया कि आखिर बात क्या हुई? लक्ष्मी जी ने मेरा वरण क्यों नहीं किया? रास्ते में एक तालाब पड़ता था। नारद जी ने सोचा कि इसमें मुंह ही देख लिया जाये। मैं इतना सुन्दर हूं और फिर भी लक्ष्मी जी ने मेरा वरण नहीं किया। भगवान् से मैंने प्रार्थना की, उन्होंने भी कोई सहायता नहीं की। मैं उनका अनन्य (भक्त) हूं, फिर भी वे मेरा तमाशा ही देखते रहे कि जिससे मुझे अपमानित होना पड़ा। उनके मन में भगवान् के प्रति भी नाराजगी थी, वे अपने भाग्य से भी रुठे हुए थे, स्वयं लक्ष्मी को भी नासमझ

मान रहे थे और सोच रहे थे कि सुन्दरता की पहचान करने वाले भी संसार में नहीं रह गए। परन्तु जब उन्होंने तालाब में देखा तब उन्हें एहसास हुआ कि उनकी शक्ल बन्दर जैसी है और शक्ल (मुख) तो मन का दर्पण होता ही है, तो उन्हें लगा कि अब बन्दरपन बाकी है।

आज उसी कथा की व्यावहारिक पुनरावृत्ति हो रही है। कई हैं जो लक्ष्मी का वरण करना चाहते हैं, अर्थात् नर से नारायण बनना चाहते हैं (क्योंकि लक्ष्मी तो नारायण ही का वरण करती हैं) परन्तु वे अब बने तो नारद ही हैं। वे **लक्ष्य में** तो टिके ही नहीं होते, अत: **लक्ष्मी** उनका वरण कैसे करें? परन्तु वे दोष भगवान् को देते हैं। यद्यपि अभी उनके अपने ही मन में बन्दर झलक मार रहा है। वे यों हैं—नारद ही। वे इधर की उधर और उधर की इधर सुनाकर मन-मुटाव पैदा करते हैं। वे ऐसे समाचार या सन्देशा सुनाते हैं कि जो संकट ही की सूचना देता है। फिर भी लोग नहीं समझते कि यह नारद जी आये हैं तो अवश्य ही कोई संकट का समाचार लाये होंगे।

कहते हैं कि नारद जी तीनों लोकों की सैर कर लेते थे। वे स्वर्गलोक या ब्रह्मलोक से आते थे और इस मृत्युलोक के सामने खड़ताल बजाते हुए कहते—"भज मन नारायण, नारायण!" स्पष्ट है कि यह वार्ता संगमयुग की ही हो सकती है जबकि 'ब्रह्मा-पुत्रों—ब्रह्माकुमारों—को स्वर्ग, ब्रह्मलोक का भी ज्ञान प्राप्त होता है और वे योग द्वारा इनमें से किसी भी लोक की (मानसिक) यात्रा करके आ सकते हैं। परन्तु आप अध्ययन से देखेंगे कि भले ही नारद जी के बारे में माना तो यही जाता था कि वे तीनों लोकों की यात्रा ही करते रहते हैं और ऊपर के लोक से आकर सन्देश देते हैं परन्तु जो सन्देश वे देते थे वह अजीब ही होता था। वह प्राय: किसी संकट की ही पूर्व-सूचना देते थे। यद्यपि वह सन्देश किसी एक के लिए खुशी का होता परन्तु समाया हुआ उसमें भी संघर्ष ही होता था। वह सन्देश ऐसा होता कि चोर को कहते कि चोरी करो और कोतवाल को कहते कि चोर को पकड़ो और चौकीदार को कहते हैं कि चाहे तो जागो, चाहे तो न जागो! ऐसे ही लोग जो योग का भी थोड़ा अभ्यास करने लगते हैं परन्तु वे संकटों और समस्याओं ही की उधेड़बुन में रहते हैं और योगी बनने का पुरुषार्थ करने या कराने वाली बात की बजाय मृत्युलोक के झमेलों ही की बात बताते हैं, वास्तव में वे नारद हैं। वे "खड़ताल" ही बजाते रहते हैं। नारायणी नशे में या स्थिति मे नहीं रहते बल्कि "भज मन नारायण.... नारायण...." ही का राग अलापते रहते हैं।

कहने का भाव यह है कि स्वयं को ब्रह्मा की सन्तान समझने के बाद भी, ब्रह्मा पिता के समान बनने की बजाय, कई लोग नर से श्री नारायण बनने का लक्ष्य लेने के बाद भी ब्रह्मा तथा विष्णु की बपौती (Inheritance) को लात मारते हैं, उनके गुणों को धारण नहीं करते। ऐसे ही लोग नारायण बनने की बजाय नारद (भक्त मात्र) ही बने रहते हैं। वे अपने पिछले संस्कारों का वर्तमान ईश्वरीय विद्या के साथ सम्मिश्रण कर देते हैं और फिर उस क्षीर-नीर को अलग करने में भी असमर्थ होते हैं। यदि किसी में पहले '**मुखिया**' बनने का संस्कार था तो वह ज्ञान लेने वालों के सरपंच, 'नगर अध्यक्ष', 'तहसीलदार', 'लाट साहिब' या मुखिया बनने के पुरुषार्थ में लग जाते हैं। अत: वे नम्रता, निमित्त भाव को छोड़कर 'नेता' बनने की नीयत रख लेते हैं। वे सेवा भी करना चाहते हैं, सन्देश भी देना चाहते हैं परन्तु सेवा के बदले में प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा का मेवा भी चखना चाहते हैं। वे नर से नारायण बनने की बजाय "नर से नाराज" बने रहते हैं। जैसे कई भक्त आरती नहीं करते भगवान् से आढ़ती करते हैं, माला नहीं फेरते, माल + आ, माल + आ जपते रहते हैं, वे भी राजयोग में राज पर अधिक बल देते हैं, योग पर कम। ऐसों ही के लिए कहा गया है कि—आये थे हरि भजन को, ओटन लागे कपास। चले थे नारायण बनने, बन गए नारद या नए प्रकार के नेता!

अच्छा होगा कि इस वर्ष रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर ऐसे व्यक्ति, जो अपने मन में समझते हों कि वे थोड़ा-कुछ नारद की तरह का कार्य करते हैं, अपने मन में दृढ़ संकल्प लें और इस विचार की राखी बांधें कि अब वे नर से श्री नारायण ही बनने के लक्ष्य पर पूर्ण ध्यान देंगे।

—जगदीश

सिरसागंज (मैनपुरी) सेवाकेंद्र पर जिलाधीश तथा नगराध्यक्ष भ्राता आर.पी. अग्रवाल को ब्र.कु. बहनें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

परिवर्तन शक्ति

ब्र.कु. प्रोफेसर कालिदास, अहमदाबाद

आध्यात्मिक जीवन को परिवर्तन का रास्ता कहा जाता है। लौकिक जीवन की कमियां; मर्यादाएं, कमजोरियों या शिथिलता को स्वीकार करना और इसे हटाने के लिए पुरुषार्थ करना—यह अध्यात्म-जीवन की पहली सीढ़ी है।

मानव आत्मा में पिछले अनेक जन्मों के संस्कारों की छाप लग जाती है। उसका अच्छा या बुरा असर पड़ता है। यदि बुरी छाप को हटाने का ठोस पुरुषार्थ नहीं किया गया, तो वह संस्कार बन जाती है। परिणामस्वरूप मानव असंस्कारी, दुर्जन बन जाता है।

आजकल अखबारों में अपराधों की अनेक घटनाएं छपती हैं। रहस्य-कथाएं, अश्लील या जासूस कथाएं लिखी जाती हैं। असामाजिक तत्वों की प्रवृत्तियों को ज्यादा प्रसिद्धि मिलती है। इसके अलावा चलचित्रों में हिंसा के, गुनाहों के, काम प्रेरक चित्रण भी होते हैं। फलस्वरूप जो सरलता से ग्रहण किया जाता है, जिसमें विशेष पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं रहती, ऐसी चीजें लोग आसानी-से उठा लेते हैं। इस तरह समाज में से एक-एक सज्जन कम होता है और दुर्जनों की संख्या में वृद्धि होती है।

आध्यात्मिक पथ पर चलना अर्थात् अपने वर्तमान जीवन में परिवर्तन का निर्णय करना। अपने जीवन में दिव्यगुणों का अभाव खटकता है, कई बातें परिवर्तन करने योग्य लगती हैं, स्वभाव संस्कार, आचार-विचार में परिवर्तन करना महसूस होता है। दिल में मानसिक शांति की चाह होती है। जीवन में अवगुणों से मुक्ति पाने की और दिव्यगुणों को धारण करने की, ईश्वर मिलन की व्याकुलता पैदा होती है तब ही आध्यात्मिक पथ पर चल सकते हैं।

आध्यात्मिक जीवन वह परिवर्तनशील जीवन है, उससे साधक में परिवर्तन शक्ति की तीव्रता आनी चाहिए, यदि साधक तटस्थ भाव से अपना आंतर निरीक्षण करके, अपने अवगुणों को स्वीकार करता है तब ही परिवर्तन शक्ति का लाभ उठा सकते हैं। औरों के दुर्गुण देखना सहज है पर खुद के दुर्गुणों को स्वीकार करना कठिन कार्य है। यदि साधकको अपनी छोटी या सूक्ष्म कमी भी दिखाई देती है तो वह परिवर्तन कर सकता है। केवल कमियों को स्वीकार करना ही पर्याप्त नहीं है पर इसे दूर करने का, लगातार ठोस पुरुषार्थ करना अति आवश्यक है।

अपना मन संवेदनशील होता है। जीवन में घटित कड़वे अनुभव, अपमान, अवहेलना आदि को भूलना मुश्किल लगता है। अपने साथ किये गये अन्याय को भी भूलने में समय लगता है। किसी ने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया हो, तो इसे जल्द से भूलकर क्षमा करना हमें कठिन लगता है। देह अभिमान की आग दिल में भिन्न-भिन्न रूप से जलती रहती है। यदि इन सब बातों को अल्प समय में भूल नहीं सकते, तो बैर की भावना अशांति को जन्म देती है। मानव अस्वस्थ बन जाता है। अशांत मन आत्मिक स्थिति या परमात्मा की निरंतर याद का अनुभव नहीं कर सकता। दिव्यगुणों को धारण करने में उसे कष्ट महसूस होता है। पुराने संस्कार बारी-बारी से उछाल खाते हैं, उसे पीड़ित करते हैं, अशांत करते हैं। काम विकार के सूक्ष्म रूप भी उसे तंग करते हैं। मानव संबंधों में रस की अनुभूति करके फिर अनासक्त बनना कठिन लगता है। लेकिन देह सहित, देह के सर्व संबंधों में से आसक्ति मिट जाये, तब ही आध्यात्मिक पथ में उन्नति संभव है।

परिवर्तन शक्ति की धारणा साधक की व्यक्तिगत क्षमता पर आधारित है। कोई साधक ज्ञान रत्नों को सुनते ही परिवर्तन आरंभ करते हैं। दृढ़ मनोबल से परिवर्तन शक्ति की तीव्रता को धारण करते हैं। इससे कम समय में ही उसके स्वभाव, संस्कार में परिवर्तन आता है और वह अपनी मंजिल पर पहुंचता है। लेकिन जो साधक पुरुषार्थ में ढीला होता है उसकी परिवर्तन की गति भी धीमी होती है। मतलब कि उसमें दिव्यता देरी से आती है। सत्संग में या साधकों के बीच प्रसिद्ध होने के लिए,उचित स्थान प्राप्ति के लिए उसे काफी वर्षों तक परिवर्तन शक्ति का उपयोग करना पड़ता है।

मानव जन्म से ही महान् नहीं होता, त्रुटियां उसमें होती हैं। लेकिन कोई उसको स्वीकार करके तीव्रता से परिवर्तन करते हैं जिसके फलस्वरूप वह महात्मा, महामानव, संत या आदर्श मानव बनता है। दिव्य जीवन का पथ सबके लिए खुला है। समान सुविधाएं मिलने पर भी सिद्धि तो साधक की परिवर्तन शक्ति के आधार से मिलती है।

कभी-कभी कर्मकांड या बाह्य आचरण पर विशेष जोर दिया जाता है। इससे ये सब कर्मकांड, बाह्य आचरण साधक के जीवन में प्रधानता पाते हैं लेकिन बाद में ये सब यंत्रवत हो जाता है। क्योंकि परिवर्तन का आधार मन पर होता है। इसलिए कहा गया है कि—

"बालों ने क्या बिगाड़िया,
जो मूंडो सौ बार।
मनको काहे ना मूंडिये,
जा में विषय विकार।"

इस तरह विषय विकार मन में, आत्मा में हैं। इसे दूर करने के लिए योगी जीवन के नियमों का सही पालन करना चाहिए। ज्ञान श्रवण और योगाभ्यास करना चाहिए। उसमें नियमितता, सच्चाई, सफाई और तीव्रता है तो साधक में शीघ्र ही परिवर्तन आता है।

रक्षाबन्धन में छिपा श्रेष्ठ भाव

भारत में हर वर्ष श्रावणी पूर्णिमा को रक्षाबन्धन का उत्सव बहुत हर्ष और उल्लास से मनाया जाता है। श्रावण मास की पूर्णिमा के इस दिन का वैसे बहुत महत्व माना गया है। चिरकाल से यह प्रथा चली आ रही है कि इस दिन प्रातः काल ब्राह्मण अपने यजमानों को पांच कर्म विशेष रूप से कराता है। एक तो वह बहुत से पापों की सूची सुनाते हुए कहता है कि मनुष्य भूल से या जान-बूझ कर ऐसे-ऐसे पाप कर बैठताहै और आज के दिन यह प्रतिज्ञा करनी है कि आज से इन पापों को नहीं करेंगे। वह सभी को यह कहता है कि अब पूर्व काल के ऐसे बुरे कर्मों वाले जीवन को भूल कर यह निश्चय करो कि **"मैं शुद्ध आत्मा हूं और आज से फिर ऐसे कर्म न कर के अच्छे कर्म करूँगा।"** इसलिये इस त्योहार को **"पुण्यप्रदायक पर्व"** माना जाता है। ब्राह्मणों अथवा "द्विजों" के लिये इसे आत्म-कल्याण का पर्व माना गया है।

दूसरे, इस दिन ब्राह्मण पूर्वकाल में हुए महान व्यक्तियों, राजऋषियों आदि का वर्णन करते हुए बताता है कि आप उनके वंशज हो। इसका भाव यह होता है कि आपको भी उन जैसा योगी अथवा महान् बनना चाहिये।

तीसरे, वह सूर्य को ज्योतिस्वरूप परमात्मा का प्रतीक मानते हुए, सभी से "शिवसंकल्प" कराता है, अर्थात प्रतिज्ञा कराता है कि अब हम शुभ संकल्पों वाले बनेंगे।

चौथे, वह ब्राह्मणों अथवा "द्विजों" को नया यज्ञोपवीत (जनेयू) धारण करने के लिये देता है। यह भी कर्मों को श्रेष्ठ बनाने की प्रतिज्ञा का प्रतीक माना जाता है। पांचवें, जो छोटे बच्चे हैं, उन्हें इस दिन ही विद्या-अध्ययन प्रारम्भ कराया जाता है। गोया इस दिन को विद्या प्रारम्भ करने के लिये श्रेष्ठ माना गया है।

उपरोक्त सभी उपाकर्म से स्पष्ट है कि रक्षाबन्धन का त्योहार ईश्वरीय ज्ञान की धारणा करने तथा बुरे कर्मों को त्याग कर आगे के लिये पवित्र बनने का प्रतीक है।

इसी विषय में भविष्य पुराण में निम्नलिखित श्लोक है—

सर्वरोग-उपशमनं सर्व-अशुभ विनाशनम् ।
सुकृत्-कृतेनाब्दमेकम् येन रक्षा कृताभवेत ।।

अर्थात रक्षा-सूत्र बान्धने से सारे रोग नष्ट हो जाते हैं, सभी बुरे कर्म मिट जाते हैं; वर्ष में एक बार यह त्योहार मनाने से मनुष्य की रक्षा होती है। स्पष्ट है कि यह त्योहार बुरे कर्मों को समाप्त कर के आत्मा के रोग मिटाने के लिये है।

एक कथा में यह भी कहा गया है कि बहुत काल पहले देवों और दैत्यों में लड़ाई हुई थी, जिसमें देवता हार रहे थे। तब इन्द्र की पत्नी "शची" ने इन्द्र को यह राखी बान्धी थी जिससे देवताओं को विजय प्राप्त हुई। स्पष्ट है कि इस रूपक का भी यही भाव है कि मनुष्य अपनी आसुरी वृत्तियों पर पूर्ण विजय प्राप्त करना चाहता है तो उसे अपनी धर्म-पत्नी से भी रक्षा सूत्र बन्धवाना पड़ेगा जैसेकि इन्द्र ने इन्द्राणी से बन्धवाया था। आज भी ब्राह्मण जब अपने यजमान को रक्षासूत्र बान्धता है तब यह श्लोक पढ़ता है। परन्तु लोग इसके भाव को आचरण में नहीं लेते, केवल एक रस्म पूरी करते हैं—

येन बद्धोबली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वा प्रतिबन्धामि रक्षे मा चल मा चल।।

इसमें स्पष्ट कहा गया है कि तुझे भी मैं वही राखी बांध रहा हूँ। तुम चलायमान न होना, अचल रहना। भाव यह है कि पवित्रता के मार्ग से विचलित न हो, ब्रह्मचर्य से पथ-भ्रष्ट न होना। परन्तु आज इस पर लोग आचरण ही नहीं करते। इसलिये संसार में देवत्व की विजय नहीं होती। इस रहस्य को समझ कर अब रक्षा बन्धन को पवित्रता की प्रतिज्ञा के रूप में मनाना चाहिये।

जो समाज सुधारने के प्रपंच में पड़ता है, किन्तु अपना सुधार नहीं करता, वह ढोंगी है।

धन का सन्तुलन ही जीवन का साधन और धनों का उन्मूलन है।

घृणा-द्वेष और क्रोध अविवेक के परिणाम हैं।

संस्कृति, सभ्यता की समन्वय सेतु राखी

कितनी महिमामय है हमारी पुरातन संस्कृति जिसकी यादगार में आज भी अनेकों पर्व, त्योहार अथवा उत्सव मनाये जाते हैं। यों तो हमारे ऐतिहासिक साहित्य के अनुसार पूरे वर्ष में कोई भी दिन ऐसा नहीं रह जाता कि जिस दिन कोई न कोई पर्व नहीं आता हो। किन्तु कुछ विशेष ही दिन अपनी कुछ न कुछ विशेषता को लिये हुए अपनी ख्याति अर्जित कर गये हैं। जैसे कि महाशिवरात्री, होली, रक्षाबन्धन तथा श्री कृष्ण जयन्ती आदि-आदि।

ऋतुओं के अनुरूप उत्सव एवं प्रत्येक इलाके की विशेषताओं को समेटने वाले यह त्योहार मानवीय जीवन की आशाओं, आकांक्षाओं, उत्सवों तथा उमंगों का प्रतिनिधित्व करने वाले होते हैं और इनकी पुनरावृत्ति आशावादी भविष्य के बारे में जन-मानस में संकल्प को सुदृढ़ करती है ताकि उज्जवल भविष्य के विश्वास की जड़ें और अधिक गहराती जायें। यही कारण है कि हमारे देश में पर्वों, उत्सवों अथवा त्योहारों की अविराम शाश्वत सरिता प्रवाहित होती चली आ रही है।

आध्यात्मिक संस्कृति या राष्ट्रीय संघटना अथवा अन्य कोई पहलू हो अर्थात किसी भी दृष्टि से देखा जाय तो रक्षा-बन्धन अपने आपमें एक अद्वितीय है और अदभुत भी। इस पर्व का तो महत्व ही निराला है क्योंकि इसमें भाई-बहिन का स्नेह, संस्कृति के अभिजात विकास का चरम सोपान है। और यह तो सर्व विदित है कि जहां स्नेह है वहां स्वतः ही संगठन को बल मिलता है।

यह पर्व श्रावण की पूर्णमासी को मनाया जाता है। यों तो इस पर्व के संदर्भ में समय के प्रवाह के साथ-साथ अनेकों लोक-मान्यतायें जुड़ती गयीं जैसे कि श्रावणी कर्म, हमग्रीव जयन्ती, संस्कृत दिवस, वैष्णव मन्दिरों में झूलोत्सव और अमरनाथ दर्शन किन्तु सार्वभौमिक लोकमान्यता इस पर्व की यह है कि यह भाई-बहन के परस्पर स्नेह का सूचक पर्व है तथा इसे ब्राह्मणों की आजीविका का एक स्रोत कहने में भी कोई अतिश्योक्ति न होगी। इस पर्व के संदर्भ में छिपा एक लम्बा इतिहास है और अनेकों घटनायें भी। जिन्हें यहां उल्लिखित कर पाना तो संभव नहीं, किन्तु संक्षेप में यह, वह रक्षा-बंधन है जिस पवित्रतम् सूत्र में बंध कर एक हिन्दु बहिन की रक्षा के लिये एक मुसलमान भाई ने अपना धन बल, सैन्य बल तथा स्वयं को न्योछावर करने में तनिक भी संकोच नहीं किया था। किन्तु आज स्थिति कुछ भिन्न है।

इस वज्र से कठोर किन्तु शहद से मृदु तथा पुष्प से सुकोमल रेशम डोरी के माध्यम से आज किसकी और कितनी सुरक्षा हो पायेगी? इस प्रश्न से समाज कोई अनभिज्ञ नहीं। जबकि प्रत्येक वर्ष बहिनें अपने भाईयों की कलाइयों पर यह रक्षा-सूत्र बांधती हैं और भाई उस पुनीत सूत्र को बहिन की सुरक्षा का अनुबन्ध मान कर स्वयं के प्राणों की बाजी लगा कर भी बहिन की सुरक्षा का संकल्प करता है, किन्तु प्रायः यह देखा गया है कि आज बहिनों के साथ होने वाले अत्याचारों की वृद्धि ही होती चली जा रही है तथा कितने भाई हैं जो रक्षा बन्धन के साथ जुड़ी हुई रक्षा की भावना का दायित्व निभा पा रहे हैं? आज हम यह अच्छी प्रकार जानते हैं कि न जाने कितनी बेचारी असहाय, अबला बहिनें प्रतिदिन अपहरण, अनाचार तथा दहेज-दानव की बलि बेदी का शिकार होकर अपनी इहलीला ही समाप्त करती होंगी और भाई हाथ पर हाथ धरे ही रह जाते हैं।

अब सवाल यह उत्पन्न होता है आखिर इस पर्व की प्रासंगिकता क्या है? जिसमें समता, एकता, संरक्षणता एवं स्नेह के समन्वय के साथ-साथ भाई-बहिन का पवित्रतम् सनातन रिश्ता जुड़ा है। हांलाकि मानव, स्वभाव से ही स्वतन्त्रता का पक्षधर रहा है इसलिये जहां वह बंधन महसूस करता है वहां से वह मुक्त होना चाहता है, किन्तु रक्षाबन्धन को तो एक उत्सव का पर्व ही घोषित किया हुआ है और उत्सव में भला बन्धन कैसे?

वास्तव में यह बन्धन एक सुखद बन्धन है। यों तो संसार में अनेकों बन्धन हैं किन्तु मुख्य रूप से दो बन्धन माने गये हैं— एक है ईश्वरीय बन्धन और दूसरा है मायावी। ईश्वरीय बंधन से मनुष्य सुख-शान्ति-आनन्द और पवित्रता की प्राप्ति करता है और दूसरे माया के बंधन से दुःख, अशान्ति तथा अनेकों विकृतियां...। अतः यह स्वाभाविक ही है कि शान्ति तथा सुख की तरफ मनुष्य का लगाव तथा जटिल बन्धन से विमुख होना। रक्षा-बन्धन भी इसी प्रकार का एक ईश्वरीय बन्धन ही था किन्तु आज इसे भौतिक स्वरूप मिल जाने पर मात्र एक रस्म अदायगी तक सीमित कर दिया है। कारण कि हमारी अध्यात्म प्रधान संस्कृति के ह्रास तथा धर्म-कर्म के क्षीण हो जाने से हमारे पर्वों को गौण कर दिया

गया है। अतः अब आवश्यकता है इस क्षेत्र में हमें पुनः जागृत होने की ताकि हमारी गौरवमयी पुरातन विलुप्त प्रायः संस्कृति का पुनरुत्थान हो पाये।

इस सन्दर्भ में अनेक लोक मान्यतायें प्रचलित हैं। पौराणिक साहित्य के अनुसार कहते हैं इन्द्रदेव की रक्षा से भी इस सूत्र का गहरा सम्बन्ध है तथा कालान्तर में भारत पर होने वाले विदेशी आक्रमणों के समय भी इस सूत्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यही कारण है कि किसी हद तक जन-मानस में अभी भी आस्था है इस रक्षा सूत्र के लिये। किन्तु रक्षा का ये इतिहास स्वयं में परिपूर्ण नहीं ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि यह इतिहास तो मनुष्यों द्वारा मनुष्यों की रक्षा का है। और यह सत्य है कि मनुष्य सर्व समर्थ अथवा सर्व शक्तिवान नहीं है तथा वह स्वयं भी काल के अधीन है। हां तो यह कौन सी ऐसी बात है जिसका रहस्य न जानते हुए भी उसके प्रति श्रद्धा है आज जन-जन के मन में।

वास्तव में जब इस समस्त भूमण्डल पर मानवीय दुर्जेय शत्रु मायामय बुराइयों का पूर्ण आधिपत्य होता है अथवा पांच विकार जब अपनी दासता की जंजीरें मनुष्य के सिर पर लटका देते हैं, तब वह असहाय होकर स्वतन्त्र होने के लिये छटपटाता है। मनुष्य की उस दयनीय दशा को देख कर दया निधे करुणा सिन्धु सर्व शक्तिवान परमात्मा तब उसे उस मायावी बन्धन से मुक्ति दिला कर ईश्वरीय मर्यादाओं रूपी पवित्र बन्धन में बांधते हैं। एवं यह पावन कर्तव्य परमपिता परमात्मा अवतार लेकर गुप्त रूप से कर रहे हैं एवं इसी पुनीत रक्षा के रहस्य को छुपाये है राखी अपने आपमें। क्योंकि परमात्मा सर्व समर्थ है इसलिये अनेकों दुःखदायी बन्धनों से वह ही मनुष्य को छुड़ा सकते हैं। इसलिये उन्हें दुःख हर्ता, सुख कर्ता भी कहा गया है।

इसी अर्थ में इस पर्व को विष तोड़क तथा पुण्य प्रदायक पर्व भी कहा गया है। विष अर्थात विकार याने विकर्म (निसिद्धि कर्म) करने को उद्यत कराने वाली बुराइयाँ तथा पुण्य प्रदायक ३ ईश्वरीय मर्यादाओं रूपी लक्षमण रेखा अन्दर अथवा ईश्वरीय सुखद बन्धन बांधने वाला। अतः रक्षा बन्धन पवित्रता अथवा धर्म अर्थात दिव्य गुणों की धारणाओं की रक्षा का पर्व है। क्योंकि भाई और बहिन का सम्बन्ध अतीव पवित्र सम्बन्ध है। अतः बहिनों का भाईयों को राखी बांधने का अर्थ भी यही है कि नर-नारी दोनों यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति, कृति, स्मृति तथा स्थिति ईश्वरीय मर्यादाओं रूपी बंधन के अनुरूप ही रखेंगे। किन्तु विडम्बना यह है कि हम राखी बांध अथवा बंधवा तो लेते हैं किन्तु आधुनिक परिवेश उसे मात्र एक भौतिक रूप ही दे देता है। अस्तु, आवश्यकता है इस अत्यन्त पुनीत पर्व की प्रासंगिता समझकर इसे मात्र रस्म पूरी करने का पर्व न मानते हुए इस पर्व के महत्व को जीवन में धारण करने की।

ब्र. कु. अवतार, आबू

राखी-बन्धन "पवित्र बंधन"

रक्षा के इस पावन पर्व पर,
राखी लाई प्यार भरी।
स्वीकार करो प्यारे भैया,
अनुपम ज्ञान रत्नों से भरी।।

जनम जनम का पाप धोती
सत्कर्म का बीज बोती
देती सद्गुणों के हीरे मोती।
ऐसी स्नेह सहयोग संपन्नता भरी
राखी लाई प्यार भरी।।

एकता के सूत्र की राखी बनाई
भावना के पुष्पों से है सजाई
बांधो भैया अपनी कलाई में,
दिल के उमंग उत्साह से भरी
राखी लाई प्यार भरी।।

पाँच विकारों से दूर करने वाली
दुःख दरिद्रता हरने वाली
सुखमय संसार बनाने वाली
शिव बाबा के दुआओं से भरी
राखी लाई प्यार भरी

सुख शान्ति की झलक है जिसमें
पवित्र प्रेम की फलक है जिसमें
बेहद खुशी छिपी है जिसमें
शिवबाबा की यादों से भरी
राखी लाई प्यार भरी

ब्र.कु. गोदावरी (मुलुंद), बम्बई

शब्द चित्र

सफर एक रात का

रात का सफर। ट्रेन मन्थरगति से रात के सन्नाटे को चीरती बढ़ी जा रही थी, डिब्बे का हर यात्री अपने-अपने ढंग से व्यस्त था। कोई ऊंघ रहा था, कोई अपने साथी से बातें कर रहा था, कोई गुनगुना रहा था। एक तरफ शायद कोई बड़ा परिवार जमा था, नारी जगत की चर्चायें, युवा स्वरों के ठहाके और उनमें उमरदार आवाज जिसमें दम का कम दमे का आभास ज्यादा मिलता था, एक अजीब से वातावरण की सृष्टि कर रहे थे। किनारे की सीट पर बैठी मैं अपने भोर के कार्यक्रमों की रूपरेखा के बारे में सोच रही थी।

सहसा एक झटका लगा, शायद किसी छोटे स्टेशन पर गाड़ी रुकी थी, एक हल्का सा कोतूहल भरा कोलाहल डिब्बे में उभरा लेकिन दूसरे क्षण गाड़ी रेंग चली। लगा कुछ नये यात्री इस डिब्बे में आ गये थे, रेलयात्रा का तो यही क्रम ही है कि हर स्टेशन पर कुछ यात्री आते हैं कुछ अपने गन्तव्य स्थान पर उतर जाते हैं। मैं फिर अपने विचारों में खो गई थी, ट्रेन की गति तेज हो गई थी।

अचानक डिब्बे का अर्थहीन कोलाहल चीख पुकारों में बदल गया, मेरी तन्द्रा टूट गयी, चार पांच युवक जो इस स्टेशन पर चढ़े थे सबके मुँह कपड़ों से ढके हुए थे। छुरे और पिस्तौलें दिखाकर लोगों से माल निकालने की धमकी दे रहे थे, रोने-धोने गिड़गिड़ाने और चोट खा-कर कुछ कराहने और जोर जबरदस्ती छीना झपटी का बाजार गर्म था। मैं विस्फरित नेत्रों से देख रही थी, मेरा श्वेत वस्त्रावृत, आभूषण रहित परिवेश एक ऐसा कवच था जिसके कारण मेरे पास कोई नहीं आया। हां एक लम्बा सा हृष्ट-पुष्ट युवक जो शायद उनका सरदार था अवश्य मुझ से कुछ दूरी पर पिस्तौल ताने खड़ा था। उसका भी चेहरा औरों की भांति कपड़े से कसा हुआ था। केवल आंखे चमक रहीं थी। एकाकर ट्रेन की गति धीमी पड़ने लगी, शायद चेन खींची गई थी और वे लोग अपना काम पूरा करके उतरने की तैयारी में थे। पोटलियों में बंधी वसूली और चन्द सूटकेस लेकर बाकी लोग एक एक कर अत्यन्त धीमी गति से रेंगती हुई ट्रेन से कूद गये। इस बीच उनका सरदार जो मेरे पास खड़ा था अपने साथियों को कवर लिये रहा, सबसे अन्त में वह जैसे ही कूदने के लिए मुड़ा उसकी आंखें मुझ पर पड़ीं। एक क्षण को लगा कि वह ठिठका, उसकी आंखों में क्रूरता के स्थान पर पहचान की एक चमक थी और उसके साथ ही गहरी वेदना की झलक कौंध गयी। इसी ही क्षण में वह ट्रेन से कूदकर अंधकार में खो गया, उसकी आंखों की वह अथाह उदासी और वेदना की एक पल की झलक ने दस वर्ष पहले के अतीत में पहुँचा दिया। सन् १९७८, विश्वविद्यालय का मेरा अन्तिम वर्ष, लम्बी चौड़ी देह यष्टि, गौर वर्ण सुन्दर चेहरे पर अथाह उदासी से भरी आंखों वाला हमेशा गुमसुम रहने वाला सहपाठी विनय अनायास ही मेरी आंखों में तैर गया, तो क्या इस ट्रेन डकैतों का सरदार विनय था?

रेंगते-रेंगते गाड़ी बिल्कुल रुक गयी। क्या हुआ? जानने को उत्सुक प्रश्न-कर्ता, कैसे हुआ, जानने की औपचारिकता पूरी करने आये गार्ड और सुरक्षा कर्मियों के अटपटे सवाल और अगले जंक्शन पर रिपोर्ट दर्ज कराने की सलाह। कुछ रो रोकर, कुछ क्रोध से भरा हाल सुनाते, पुरुष, सहमे हुए बच्चे, मैं सभी को निर्निमेष देख रही थी। प्रत्यक्ष रूप से छीनने के लिए न कुछ मेरे पास था न ही छिना, लेकिन न जाने क्यों मुझे लग रहा था बिना प्रत्यक्ष हानि के ही किसी ने मेरा बहुत कुछ छीन लिया हो।

ट्रेन औपचारिकतायें पूरी होने के बाद फिर रेंग चली, मेरी आंखों के सामने एक दशक पहले का अतीत किसी चलचित्र के स्थिर फ्रेम की भांति आ खड़ा हुआ। विनय बड़ा मेधावी छात्र था, प्रोफेसरों को उससे बड़ी उम्मीदें थीं। इतना ही नही तिल-तिल कर मरती उसकी बूढ़ी विधवा मां उसी के उज्जवल भविष्य के सपनों की डोर से बंधी जा रही थी। यह किसी और ने मुझे बताया था लेकिन यह क्या हुआ? किससे पूछूँ कि विनय अपने पथ से भ्रष्ट कैसे हुआ? कौन से वे कारण हैं जो मेधा शक्ति और सामर्थ्य के धनी, विनय जैसे युवकों को पतन के गर्त में ढकेल देते हैं? सच तो यह है कि इन कारणों को खोजने की जरूरत नहीं है, बात बड़ी सीधी सादी है।

मां सरस्वती के मन्दिर इन विद्यालयों और विश्व-विद्यालयों से हमारे युवा वर्ग को शिक्षा तो मिलती है, बाद में कुछ उपाधियां भी मिलती हैं किन्तु वह जीवन दृष्टि नहीं मिलती जो उसे किसी मंजिल का पता दे सके। शिक्षा समाप्त करने के साथ ही सिलसिला शुरू होता है नौकरी

या रोजी की तलाश का सफर। खोजते-खोजते धैर्य का दामन छूट जाता है। एक-एक दिन घटती उम्र का एहसास, आशा-निराशा के बीच झूलते सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होते हैं, सोर्स, पैसा, रिश्वत और पिछले दरवाजे से झांकती सफलता की रोशनी उसकी अपनी नहीं हो पाती तब मन में विद्रोह उभरता है, व्यवस्था के प्रति जीवन की अर्थहीनता के बोध से अच्छे-बुरे, शुभ-अशुभ की पहचान ही नहीं रह जाती।

ऐसी स्थिति में चोरी, राहजनी, छल और परपंच के बूते पर बिना परिश्रम की कमाई पर जीवन के सारे भौतिक सुख भोगने वाले एक व्यक्ति का परिचय या सानिध्य उसके कदमों को डगमगा देने के लिए काफी होता है। वह पहला अपराध बड़ी मजबूरी में करता है लेकिन वही बाद में उसकी आदत, उसका लक्ष्य और शायद जीवन का ध्येय बन जाता है।

जीवन में चाही हुई वस्तु चाहे वो नौकरी हो, चाहे कारोबार, न मिल पाने पर हमारा युवा वर्ग आखिर इतनी आसानी से हार मान कर गलत रास्ते पर जाता है, क्यों? इसका कारण यही है कि उसे किताबी ज्ञान तो प्राप्त होता है किन्तु आत्म-ज्ञान न होने से उसमें विश्वास और परिस्थितियों से जूझने की प्रेरणा नहीं मिलती और यही कारण है कि वह संघर्ष करने की बजाए आसान रास्तों पर जो प्रायः बुराई की ओर ही ले जाते हैं, आसानी से चला जाता है, सद्मार्ग और सदाचार की सीख देने वाले कोरे उपदेशों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

युवा वर्ग को निराशा के इस गड्ढे से निकालने का एक मार्ग ही शेष रहता है और वह है—उसमें आत्म-बोध जागृत करना। वह भी आध्यात्म का सहारा लेकर। यह कार्य यदि बालक की शैशवावस्था से ही शुरू किया जाए तो उसका प्रभाव चिरस्थायी होगा।

प्राणीयों में केवल मनुष्य को ही प्रभु ने वह चेतना-शक्ति दी है जो प्रेम, ज्ञान, आनंद, दया क्षमा और करुणा से ओत-प्रोत है। मनुष्य जो परमात्मा की प्रिय सन्तान है वह संसार के किसी कोने में क्यों न रहता हो, चाहे वो किसी भी जाति, वर्ग, धर्म का क्यों न हो पर एक प्रभु पिता की सन्तान है और आत्मवत सर्व भूतेषु की दृष्टि से बहुत नजदीक है एक दो के, और सम्पूर्ण वसुधा ही एक परिवार है और वो परम चेतन्य सत्ता सबका पिता। हमारे युवा वर्ग में यदि यह समझ आ जाए कि सत्य-शील, सयंम और प्रेम ही उसकी अक्षय पूंजी हैं तो वह विपरीत परिस्थितियों में भी अपना संयम और संतुलन नहीं खोयेगा और हमेशा शुभ कर्मो की ओर ही प्रेरित होगा।

उसके साथ-साथ शिक्षा पद्धति में परिवर्तन भी बहुत आवश्यक है, व्यक्ति को शिक्षा ऐसी मिले जिसका वो अपने जीवन यापन में सार्थक उपयोग कर सके, शिक्षा से यह सीख भी मिलनी चाहिए कि निष्ठा पूर्वक किया जाने वाला कर्म कभी छोटा नहीं होता बल्कि सत्यनिष्ठा से किया गया कर्म मनुष्य के मान सम्मान का मापदण्ड होता है। जिस दिन हमारे युवा वर्ग को यह समझ आ जाये उसके लिए कोई भी कार्य मुश्किल नहीं होगा, वह स्वभावतः छोटे से छोटे कार्य से आरम्भ करके अपने वृहत्तर लक्ष की ओर बढ़ेगा। मंजिल साधनों के बल पर नहीं साधना के बल पर मिलती है और तभी साधक गौरव के शिखर पर पहुँच सकता है। हमारे शिक्षाविद् इस ओर ध्यान दें तो हमारी युवा पीढ़ी निराशा के अंधकार से निकल कर आशा के सुनहरे भविष्य का स्वागत करने को तत्पर होगी।

प्रकाश का अंधकार से, सत्य का असत्य से, शिव का अशिव से यह युद्ध नया नहीं हैं, अनायास ही मेरे मानस पटल पर श्री रामचरित मानस में युद्धकाण्ड का वह प्रसंग घूम गया-

"रावण रथी विरथ रघुवीरा,
देख विभीषण भयेउ अधीरा"

और विभिषण की शंकाओं के उत्तर में श्री राम का कथन है हे सखा। मेरे पास तो वह अलौकिक रथ है जिस पर चढ़कर लड़ने वाला अजेय होता है, शौर्य और धैर्य जिसके दो पहिये हैं, सत्य शील जिसकी ध्वज पताका है, इन्द्रिय-निग्रह, बल, विवेक, परोपकार के चार घोड़े हैं जो क्षमा-कृपा और समता की रज्जु से नियंन्त्रित हैं, निरन्तर ईश्वरीय स्मृति ही इसका सारथी है, वैराग्य की ढाल है, संतोष की कृपाण है, बुद्धि की प्रचण्ड शक्ति है, विज्ञान कोदण्ड है, श्रेष्ठ संकल्पों के तीर हैं, बड़ों की छत्रछाया अमोघ कवच है, उसे कौन जीत सकता है।

मन का अंधकार और उससे उपजा नैराश्य ही आज का रावण है। हमारा युवा वर्ग श्री राम की भांति ही इस धर्म-मय रथ पर आरूढ़ होकर युद्ध करे तो इसका विनाश करने में कितनी देर लगेगी? एकाएक झटके से मेरी तन्द्रा टूटी-खिड़की के बाहर देखा तो प्रातः की किरण फूट रही थी, आकाश में बाल रवि की मुस्कान बिखरने लगी थी। इस मुस्कान में न जाने क्यों विनय की मुस्कराती हुई आकृति का आभास मुझे हो रहा था, मेरे सामने सुबह का अखबार खुला पड़ा था " युवा जागृति अभियान" का सम्पूर्ण विवरण पढ़कर लगा कि यदि ऐसे आयोजन होते रहे तो अनेकों युवा बदल सकते हैं। मैं अपने मंतव्य पर पहुँच गयी थी।

ब्र. कु. मनोरमा, इलाहाबाद

साहित्य की समस्याएं और समाधान

आज का भारतीय समाज नित्य प्रति बढ़ती हुई महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, जनसंख्या वृद्धि , उभरती हुई धार्मिक संकीर्णता तथा असहिष्णुता, चारों ओर की हड़तालों, आंदोलन तथा तोड़-फोड़ के दृश्य और कोलाहल, ढहते हुए प्राचीन आदर्श, बिगड़ते हुए नैतिक मूल्य और मिटती हुई मर्यादाओं के बीच टूटता-सा विनाश के कगार पर खड़ा है। वर्तमान की मानवता परमाणु-युद्ध तथा अन्य कल्पित आपदाओं के बीच भयाक्रांत है, नैराश्यपूर्ण घनी उलझनों में स्वयं को "किंकर्तव्य विमूढ़" अनुभव कर रही है। निराश, हताश मानवता की आत्मघाती स्थिति आज स्वयं स्पष्ट है। इसका एक विरूप दृश्य कमल सुधाकर जी के शब्दों में —

सर्वत्र व्याप्त है
स्वार्थ, द्वेष, कपट, अनीति, अप्रमाणिकता
और असत्य का अन्धकार।
प्रपंच के तांडव हो रहे हैं-
मानवता की हत्या हो रही है
दो पैर वाले गिरगिट
क्षण क्षण पर रंग बदल कर
धौंगड़ धिन्ना कर रहे हैं।

भारतीय साहित्य और विश्व वाङ्मय में अनेकानेक ऋषि, दार्शनिक, कवि, साहित्यकार, कलाकार तथा शिवत्व के आराधक साधु संत भक्त एवं समाज सुधारकों के मानव उर्ध्वीकरण-उदात्तीकरण के अविरत प्रयासों का यह अकल्पित परिणाम आज प्रत्येक भावक के हृदय को विदीर्ण कर रहा है। आखिर मानव-मूल्य दिनों-दिन क्यों गिरते जा रहे हैं? यही आज की ज्वलंत समस्या है।

मानवीय मूल्यों के विघटन की आत्मघाती प्रतिध्वनि डॉ० धर्मवीर भारती के अन्धायुग में स्पष्ट है—

यह आत्म हत्या होगी प्रतिध्वनित
इस पूरी संस्कृति में
दर्शन में, धर्म में, कलाओं में
शासन व्यवस्था में
आत्मघात होगा बस अंतिम लक्ष्य मानव का।

भारती जी का स्पष्ट अभिमत है- "विज्ञान की इस परिणिति ने एक अजीब सी विषम परिस्थिति ला दी...। इस सारे अभियन्ता का केन्द्र-बिन्दु था मनुष्य और वह एक विचित्र शून्यता में परिवर्तित हो गया। आज हम सारे मूल्यों का अवमूल्यन पाते हैं— एक विराट अराजकता, एक घातक अंधकारमय शून्य। मूल्यों के इस विघटन ने कैंसर की तरह मानवीयता को अन्दर से खोखला बनाना शूरू कर दिया।"

साहित्य जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा का सशक्त आधार है। मूल्य-सिद्धि मानवीय अनुभव द्वारा प्रथम जीवन में होती है फिर वही साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। आज जो मानव-विवेक और मूल्यों को लेकर असंख्य प्रश्न उभर रहे हैं, उसका समाधान आधुनिक कृतियां कहाँ तक दे पाती हैं—यह भी विचारणीय है। भविष्य अभिनव मूल्यों के लिए लालायित है, उसके लिए एक आमूल क्रांति, परिवर्तन तथा परम्पराओं के शव का अग्नि संस्कार आवश्यक है। तब ही प्रेम, प्रज्ञा, पवित्रता तथा सत्यं, शिवम, सुन्दरम की सुनहली फुलवारी सुवासित होगी।

मनुष्य ने अपने साध्य की चरम कल्पना "परमात्मा" के रूप में की है। परमात्मा ही मानवीय मूल्यों की समग्रता का रूप है। परन्तु हमारे यहां धर्म में कामासक्ति का अन्तः निवेश होता आया है। कामाधिक्य से पीड़ित व्यक्ति धर्म से पराङ्मुख हो जाता है। धर्म के नियमों की जब अवहेलना प्रारम्भ हो जाती है, तो समाज के नैतिक-मूल्यों, नियमों की भी उपेक्षा होने लगती है।

भारतीय चिन्तन धारा में नैतिकता एवं धर्म को एक ही माना गया है। बिना नैतिक पवित्रता के सत्य ज्ञान-विवेक संभव नहीं। सामान्यतः धर्म को कर्तव्य एवं नैतिक धर्म ही माना जाता है। "धारयतीति धर्मः" धारणा, आचरण की शुद्धता ही धर्म है, नैतिकता है। परन्तु आज के अनास्थावाद ने समस्त नैतिक नियमों को प्रभावहीन बना दिया है। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के साथ नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण संबंध है। मानव मात्र के कल्याण की भावना, प्रत्येक के प्रति प्रेम, दया और करुणा का व्यवहार सार्वभौमिक नैतिकता है। यही मानवता किंवा मानववाद है, जो वर्ण, जाति, धर्म, रंग तथा देश-काल से परे है। इन सनातन मूल्यों से मनुष्य निरपेक्ष नहीं रह सकता। वास्तव में अपनी अपूर्णता में पूर्णता लाने की लालसा ही मूल्य निर्माण का आदि स्रोत है।

परमात्मा पूर्ण है। इस जागतिक लीला में परम पुरुष-परमात्मा ही सत्य सनातन परम धर्म है। उस परमात्मा को जानने से पूर्व स्वयं को जानना नितान्त आवश्यक है, परन्तु वास्तविकता यह है कि —

जिस्म और रूह का रिश्ता भी अजब है,
कि उम्र भर साथ रहे, पर तार्रुफ भी न हुआ।

या रोजी की तलाश का सफर। खोजते-खोजते धैर्य का दामन छूट जाता है। एक-एक दिन घटती उम्र का एहसास, आशा-निराशा के बीच झूलते सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होते हैं, सोर्स, पैसा, रिश्वत और पिछले दरवाजे से झांकती सफलता की रोशनी उसकी अपनी नहीं हो पाती तब मन में विद्रोह उभरता है, व्यवस्था के प्रति जीवन की अर्थहीनता के बोध से अच्छे-बुरे, शुभ-अशुभ की पहचान ही नहीं रह जाती।

ऐसी स्थिति में चोरी, राहजनी, छल और परपंच के बूते पर बिना परिश्रम की कमाई पर जीवन के सारे भौतिक सुख भोगने वाले एक व्यक्ति का परिचय या सानिध्य उसके कदमों को डगमगा देने के लिए काफी होता है। वह पहला अपराध बड़ी मजबूरी में करता है लेकिन वही बाद में उसकी आदत, उसका लक्ष्य और शायद जीवन का ध्येय बन जाता है।

जीवन में चाही हुई वस्तु चाहे वो नौकरी हो, चाहे कारोबार, न मिल पाने पर हमारा युवा वर्ग आखिर इतनी आसानी से हार मान कर गलत रास्ते पर जाता है, क्यों? इसका कारण यही है कि उसे किताबी ज्ञान तो प्राप्त होता है किन्तु आत्म-ज्ञान न होने से उसमें विश्वास और परिस्थितियों से जूझने की प्रेरणा नहीं मिलती और यही कारण है कि वह संघर्ष करने की बजाए आसान रास्तों पर जो प्रायः बुराई की ओर ही ले जाते हैं, आसानी से चला जाता है, सद्मार्ग और सदाचार की सीख देने वाले कोरे उपदेशों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

युवा वर्ग को निराशा के इस गड्ढे से निकालने का एक मार्ग ही शेष रहता है और वह है—उसमें आत्म-बोध जागृत करना। वह भी आध्यात्म का सहारा लेकर। यह कार्य यदि बालक की शैशवावस्था से ही शुरू किया जाए तो उसका प्रभाव चिरस्थायी होगा।

प्राणीयों में केवल मनुष्य को ही प्रभु ने वह चेतना-शक्ति दी है जो प्रेम, ज्ञान, आनंद, दया क्षमा और करुणा से ओत-प्रोत है। मनुष्य जो परमात्मा की प्रिय सन्तान है वह संसार के किसी कोने में क्यों न रहता हो, चाहे वो किसी भी जाति, वर्ग, धर्म का क्यों न हो पर एक प्रभु पिता की सन्तान है और आत्मवत सर्व भूतेषु की दृष्टि से बहुत नजदीक है एक दो के, और सम्पूर्ण वसुधा ही एक परिवार है और वो परम चेतन्य सत्ता सबका पिता। हमारे युवा वर्ग में यदि यह समझ आ जाए कि सत्य-शील, सयंम और प्रेम ही उसकी अक्षय पूंजी हैं तो वह विपरीत परिस्थितियों में भी अपना संयम और संतुलन नहीं खोयेगा और हमेशा शुभ कर्मो की ओर ही प्रेरित होगा।

उसके साथ-साथ शिक्षा पद्धति में परिवर्तन भी बहुत आवश्यक है, व्यक्ति को शिक्षा ऐसी मिले जिसका वो अपने जीवन यापन में सार्थक उपयोग कर सके, शिक्षा से यह सीख भी मिलनी चाहिए कि निष्ठा पूर्वक किया जाने वाला कर्म कभी छोटा नहीं होता बल्कि सत्यनिष्ठा से किया गया कर्म मनुष्य के मान सम्मान का मापदण्ड होता है। जिस दिन हमारे युवा वर्ग को यह समझ आ जाये उसके लिए कोई भी कार्य मुश्किल नहीं होगा, वह स्वभावतः छोटे से छोटे कार्य से आरम्भ करके अपने वृहत्तर लक्ष की ओर बढ़ेगा। मंजिल साधनों के बल पर नहीं साधना के बल पर मिलती है और तभी साधक गौरव के शिखर पर पहुँच सकता है। हमारे शिक्षाविद् इस ओर ध्यान दें तो हमारी युवा पीढ़ी निराशा के अंधकार से निकल कर आशा के सुनहरे भविष्य का स्वागत करने को तत्पर होगी।

प्रकाश का अंधकार से, सत्य का असत्य से, शिव का अशिव से यह युद्ध नया नहीं हैं, अनायास ही मेरे मानस पटल पर श्री रामचरित मानस में युद्धकाण्ड का वह प्रसंग घूम गया-

"रावण रथी विरथ रघुवीरा,
देख विभीषण भयेउ अधीरा"

और विभिषण की शंकाओं के उत्तर में श्री राम का कथन है हे सखा। मेरे पास तो वह अलौकिक रथ है जिस पर चढ़कर लड़ने वाला अजेय होता है, शौर्य और धैर्य जिसके दो पहिये हैं, सत्य शील जिसकी ध्वज पताका है, इन्द्रिय-निग्रह, बल, विवेक, परोपकार के चार घोड़े हैं जो क्षमा-कृपा और समता की रज्जु से नियन्त्रित हैं, निरन्तर ईश्वरीय स्मृति ही इसका सारथी है, वैराग्य की ढाल है, संतोष की कृपाण है, बुद्धि की प्रचण्ड शक्ति है, विज्ञान कोदण्ड है, श्रेष्ठ संकल्पों के तीर हैं, बड़ों की छत्रछाया अमोध कवच है, उसे कौन जीत सकता है।

मन का अंधकार और उससे उपजा नैराश्य ही आज का रावण है। हमारा युवा वर्ग श्री राम की भांति ही इस धर्म-मय रथ पर आरूढ़ होकर युद्ध करे तो इसका विनाश करने में कितनी देर लगेगी? एकाएक झटके से मेरी तन्द्रा टूटी- खिड़की के बाहर देखा तो प्रातः की किरण फूट रही थी, आकाश में बाल रवि की मुस्कान बिखरने लगी थी। इस मुस्कान में न जाने क्यों विनय की मुस्कराती हुई आकृति का आभास मुझे हो रहा था, मेरे सामने सुबह का अखबार खुला पड़ा था " युवा जागृति अभियान" का सम्पूर्ण विवरण पढ़कर लगा कि यदि ऐसे आयोजन होते रहे तो अनेकों युवा बदल सकते हैं। मैं अपने मंतव्य पर पहुँच गयी थी।

ब्र. कु. मनोरमा, इलाहाबाद

परम प्यारे शिवबाबा तथा अव्यक्त ब्रह्माबाबा से मेरी रूहरिहान

(अखिल भारतीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर माउन्ट आबू में भाषण प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त)

बी.के.सुनयना, आयु—साढ़े आठ वर्ष, बॉम्बे

बात पिछले साल की है, जबकि मैं इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में क्लास में मुरली सुन रही थी। शिवबाबा ने मुरली में कहा कि बच्चों को मेरे साथ रूहरिहान करनी चाहिये। मेरा छोटा-सा मन इस बात पर काफी देर तक विचार करता रहा कि यह रूहरिहान क्या है और वो भी शिवबाबा के साथ? वह कैसे? कई प्रश्न मेरे मन में पैदा होने लगे। आखिर मैंने बहन जी से पूछ ही लिया। बहन जी, यह रूहरिहान क्या होता है? उन्होंने बताया जैसे तुम अपने पापा से बातें करती हो, अपने मन की बातें उन्हें सुनाती हो, उनसे कई चीज़ों की फरमाईश करती हो, बस ऐसे ही शिवबाबा हम सबके पापा हैं। उनसे बातें करना माना रूहरिहान करना। अरे वाह! यह तो बहुत सुन्दर बात है। मैं भी शिवबाबा से बातें करूँगी, वह कहूँगी, यह कहूँगी। तभी मुझे एक विचार आया कि पापा को तो हम इन आंखों से देख सकते हैं, उनका तो मुख है, वह तो बोलते भी हैं। लेकिन शिवबाबा को तो हम इन आंखों से न ही देख सकते, न ही उनका मुख है, फिर वह मेरे से बातें कैसे करेंगे? इस प्रश्न ने मेरे मन को उलझन में डाल दिया।

सौभाग्य की बात कि अगले ही दिन क्लास में बताया गया कि मधुबन में बाबा के आने का प्रोग्राम है और गुल्जार दादी के तन द्वारा बाबा सबसे मिलेंगे। यह सुनकर मेरी खुशी का ठिकाना न रहा, अपने घर जाकर मैं नाचती रही, गाती रही, दिन बीतते गये। बाबा से रूहरिहान करने के दिन नज़दीक आते जा रहे थे।

परन्तु अफसोस एक दिन जब मैं अपने मधुबन जाने का फॉर्म भरकर बहन जी को देने के लिये लाई उसी दिन क्लास में बताया गया कि किन्हीं कारणोंवश बाबा के आने का प्रोग्राम कैन्सल हो गया है। मेरा नन्हा सा मन इस बात को सहन न कर सका। उस समय तो ड्रामा को याद कर मैंने अपने मन को संभाला। परन्तु सारा दिन मेरे मन में अनेक प्रकार के विचार चलते रहे और रात को चादर में मुँह छिपाकर मैं बहुत-बहुत रोई। मैं बाबा को याद करते रोते-रोते सो गई और यही रात मेरे लिए यादगार बन गयी। स्वप्न में एक चमत्कार हुआ। मैंने देखा कि एक बहुत सुन्दर बगीचा है और बगीचे में अकेली खड़ी मैं रो रही थी। अचानक मैंने क्या देखा कि शिवबाबा ब्रह्माबाबा के तन में वहाँ आये और बोले बेटी, रोती क्यों हो? मैंने कहा कि बाबा आपसे सूक्ष्म रीति से बातें करना तो मुझे आता नहीं। एक चान्स मिला था और वह भी आपने अपना प्रोग्राम कैन्सल कर दिया। मैं बोलती जा रही थी और रोती जा रही थी। बाबा ने मुझे अपनी गोद में बिठा लिया और फिर बोले, मीठी बच्ची, तुम्हारे लिये ही तो मैं परमधाम से आया हूँ। फिर भला मधुबन में आने से मुझे क्या एतराज़ और देखो बच्ची, अभी तो बाबा तुमसे मिल भी रहा है, बाते भी कर रहा है, फिर तुम क्यों रोती हो? कहते हुए बाबा ने मेरे आंसू पोंछे। मैं बाबा के गले लग गयी। फिर बाबा ने कहा- बच्ची, हर रोज अमृतवेले तुम मेरे पास आना, मैं तुमसे ढेर सारी बातें करूँगा। मैं तो बाबा में लीन हो चुकी थी। इतने में मेरी नींद खुल गयी। घड़ी में देखा तो ४ बजे थे। अमृतवेले बाबा से रूहरिहान करने का समय हो गया था। जल्दी-जल्दी फ्रेश होकर मैं बाबा को याद करने बैठ गयी। बाबा को गुडमार्निंग कर मैंने बाबा को कहा— बाबा, आप कितने मीठे हो, आप कितने प्यारे हो बाबा। आप जैसा मीठा तो कोई नहीं। बाबा, आप अपने बच्चों का कितना ख्याल रखते हो। सचमुच बाबा आपने तो रोते हुओं को हंसा दिया, कांटों से फूल बना दिया। आपका मैं कितना न एहसान मानूँ। अब तो बाबा आप हमें अपने साथ घर लेने आये हो। थैंक यू बाबा, थैंक यू वेरी मच।

इतने में मैंनें देखा कि बाबा मेरे सामने खड़े थे। मुझे बुला रहे थे— आओ बच्ची आओ, मेरी प्यारी बच्ची, आओ लाडली बच्ची। बाबा की दृष्टि पाकर मैं निहाल हो गई और मेरा मन गा उठा —दिल कहे बाबा तूझे देखती रहूँ, तेरे मीठे बोल बाबा सुनती रहूँ....।

तभी मैंने बाबा को कहा बाबा अब आप मधुबन आयेंगे न? बाबा कहने लगे- "बच्ची, बाबा भी ड्रामा के बंधन में बंधे हुए हैं। और ड्रामा माना ही कल्याणकारी"। मैं बाबा को देख रही थी और बाबा मुझे। थोड़ी देर के बाद बाबा बोले बच्ची, कल फिर अमृतवेले मिलेंगे, ढेर सारी बातें करेंगे और धीरे-धीरे बाबा अदृश्य हो गये। मैंने घड़ी में देखा पौने पांच बजे थे। लेकिन अब मैं बहुत खुश थी।

तो फ्रैन्ड्स, देखा आपने, ड्रामा कितना कल्याणकारी है। ओमशान्ति

प्यारा राखी का त्योहार

□ ले. ब्रह्माकुमार त्यागी, शक्तिनगर, दिल्ली

राखी है बहनों का प्यार, राखी भाई का इकरार,
राखी नफरत को दे मार, राखी है सच्चा उपहार।
प्यारा राखी का त्योहार...

राखी ब्रह्मचर्य की ताल, राखी है रक्षा की ढाल,
राखी दूर करे जंजाल, राखी करती है खुशहाल।
प्यारा राखी का त्योहार...

राखी पवित्रता का त्योहार, राखी खुशियों का इजहार
राखी प्रेम-भरा त्योहार, यह बहन-भाई का सच्चा प्यार।
प्यारा राखी का त्योहार...

राखी जीवन की तदबीर, राखी उलफत की तसवीर,
राखी आशाओं की धीर, राखी इज्जत और तोकीर।
प्यारा राखी का त्योहार...

राखी बहनों का अरमान, राखी भाई की है शान,
राखी भाई-बहन की आन, सच्चे नाते की पहचान।
प्यारा राखी का त्योहार...

राखी किसमत का आधार, राखी खुशियों का संसार,
राखी प्यार भरा इकरार, आया राखी का त्योहार।
प्यारा राखी का त्योहार...

डॉक्युमेन्ट्री फिल्म

बम्बई : भारत सरकार के फिल्म विभाग ने आबू में हुए 'सर्व के सहयोग से सुखमय संसार' सम्मेलन की १० मिनट की डॉक्युमेन्ट्री फिल्म बनाई है। फिल्म (न्यूज मैगजीन न. १५०) के १५ भाषाओं में ९६० प्रिन्टस बनाए गए हैं यह फिल्म २३ जून से देश के सिनेमाघरों में चल रही है। ३- ४ मास तक यह फिल्म दिखाई जाएगी। भारत से बाहर अन्य देशों में भी इस फिल्म की कापियां भेजी जा रही हैं।

बस्तर के निकट गांव रतेगा में ईश्वरीय सन्देश देने हेतु ब्र. कु. भाई, बहनों का एक ग्रुप नाव से प्रस्थान करते हुए।

अमृतसर में आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ध्राता एस. के. बिल्ला, प्रधान, भारतीय शिव सेना।

सेवा समाचार

वैज्ञानिकों तथा तकनीकज्ञों के लिये राजयोग शिविर

माऊण्ट आबू—विज्ञान, तकनीकी एवं आध्यात्मिक शक्तियों का परस्पर समन्वय हो जाने से निःसन्देह ही सुखमय संसार की परिकल्पना साकार होगी। यह प्रो. एस. सम्पथ, अध्यक्ष आर.ए.सी. सुरक्षा विभाग मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा। वे यहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउन्डेशन शाखा के विज्ञान एवं तकनीकज्ञ प्रभाग द्वारा आयोजित सहज राजयोग शिविर एवं परिचर्चा के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। आपने कहा मानसिक शान्ति के लिये आध्यात्मिक जागृति प्राप्त, विशेषकर राजयोग के अनुभवी विज्ञान तथा अध्यात्म की दूरियां खत्म करने के लिये एक सेतु का कार्य कर रहे हैं। आपने कहा कि भविष्य के विकास के लिये अध्यात्म-विहीन विज्ञान का दुरुपयोग हो सकता है। अतः आपने आह्वान किया कि विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वय मानव के हित में होगा।

संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने उपस्थित वैज्ञानिकों एवं तकनीकज्ञों को संबोधित करते हुए कहा कि यद्यपि भौतिक रूप से किसी ने कितनी भी उपाधियाँ हासिल की हों किन्तु जिसने अल्फ यानि अल्लाह को जाना उसने विश्व के अथाह ज्ञान के मर्म को जाना। आपने कहा कि आपने प्रकृति की शक्ति का जायज़ा लिया है, यहाँ आपको प्रकृति से परे परमात्मा अर्थात् सर्वशक्तिवान का भी ज्ञान होगा। आपने आशा व्यक्त की कि इन दोनों ही शक्तियों के ज्ञान से ही विश्व को सुखमय बनाने की योजना में आप सहयोगी बनने की प्रेरणा लेंगे।

आर०एस०गोयल, निदेशक, संचार विभाग तथा संयोजक निदेशक, नेशनल एयर पोर्ट अथॉरिटी ने कहा कि आप लोग मेरी तरह ही सत्य, आनन्द और शान्ति की खोज में यहाँ आये हैं। और यहाँ का वातावरण देखकर मुझे विश्वास है कि हमारी खोज अवश्य पूरी होगी। हम सफल हो गये हैं अर्थात् हमें अपनी मंजिल मिल गई है।

अहमदाबाद के वरिष्ठ भू-गर्भ शास्त्री मोहन सिंगल ने कहा कि यों तो कहा गया है विज्ञान आध्यात्म के बिना अधूरा है किन्तु वास्तव में अधूरा ही नहीं बल्कि विज्ञान अध्यात्म के बिना अंधा भी हो चुका है। आपने आशा व्यक्त की कि इस शिविर द्वारा विज्ञान जो आज मानवता विहीन हो गया है, उसे एक आध्यात्मिक बल मिलेगा, जिससे मानवीय नैतिक मूल्यों की सुरक्षा हो पायेगी। आपने कहा विज्ञान इस बात को स्वीकारता है कि कुछ सत्तायें ऐसी हैं जो विज्ञान की कसौटी से परे हैं, जो केवल अनुभव की जा सकती हैं। और वह हैं ईश्वरीय सत्तायें। आपने कुछ उदाहरण देते हुए कहा कि सहज राजयोग द्वारा अनेक व्याधियों का उपचार सम्भव हो सका है। इसलिए आपने बल दिया कि आध्यात्म और विज्ञान का समन्वय होना ही आज के समाज की माग है।

लगभग २०० पुस्तकों के लेखक दार्शनिक जे.सी. हसीजा, दिल्ली ने अपनी मंगल कामना व्यक्त करते हुए कहा कि विज्ञान खोज अथवा शोध का कार्य करता है और तकनीकी हमारे जीवन में अनेकों सुख-सुविधायें उत्पन्न कराने का साधन है। आपने याद दिलाया कि यह दोनों अभी तक एक वस्तु के निर्माण में असफल हैं, और वह है "परस्पर स्नेह"। ऐसी कोई भी प्रयोगशाला नहीं है जहाँ प्रेम का निर्माण करके बोतलों में बन्द कर बेचा जाय और जरूरत पड़ने पर दो चार गोलियां खाई जायें। आपने कहा प्रेम केवल प्यार के सागर परमात्मा से ही मिल सकता है और उसका साधन है सहज राजयोग। आपने जीवन के बारे में स्पष्ट किया कि पांच तत्वों का एक ढांचे में संगठित हो जाना ही जीवन है और उनके विघटन को मृत्यु कहते हैं।

इलेक्ट्रानिक्स इन्जीनियर एन.एस. सैनी ने विज्ञान को आधुनिक विश्वकर्मा बताया। किन्तु आपने कहा कि विश्वकर्मा का कार्य केवल निर्माण करना था लेकिन विज्ञान ने ऐसे उपकरणों का भी निर्माण कर दिया है जिससे मनुष्य के मन में एक भय पैदा हो गया है। मनुष्य को भयमुक्त करने के लिये विज्ञान और आध्यात्म का परस्पर तालमेल होना चाहिये।

इस सत्र में वरिष्ठ अधिवक्ता लालचन्द वत्स, उच्चतम न्यायालय ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

राखी पवित्रता, स्नेह, सहयोग की सूचक है। राखी बन्धवाइये सतयुगी दैवी स्वराज्य के अधिकारी बनिये।

सेवा समाचार

व्यापारियों एवं उद्योगपतियों के लिये राजयोग एवं परिचर्चा शिविर

माउण्ट आबू—आज का मानव अपने व्यावसायिक जीवन में जरूरत से भी ज्यादा व्यस्त है, किन्तु सवाल यह है कि क्या यह भौतिक व्यस्तता ही मानव के लिये काफी है या उसे कुछ और भी जीवन में करना चाहिये। यह भीक्खू राम जैन दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति, शिक्षाविद् एवं सांसद ने कहा। वे यहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य शाखा राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउन्डेशन द्वारा स्थापित उद्योगपति एवं व्यापारिक वर्ग प्रभाग की तरफ से आयोजित राजयोग एवं परिचर्चा शिविर के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। आपने कहा आज इस बात की निहायत जरूरत है कि मानव को मानसिक शक्ति प्राप्त हो। उसके लिये आपने आशा व्यक्त की कि यह शिविर अतिशय उत्तम होगा। आपने आयोजकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप धन्यवाद के पात्र हैं कि आपने इस तनावप्रद माहौल में मनुष्य को शान्ति प्रदान कराने का यह अनुकरणीय कार्य आयोजित किया है।

संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने उपस्थित उद्योगपति एवं व्यापारी वर्ग को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप आज तक मनुष्यों से ही व्यापार करते रहे हैं किन्तु इस शिविर में आपको इसलिये बुलाया है कि यहाँ से आप परमात्मा से भी व्यापार करने की कला को सीख कर जायें। आपने कहा हालांकि भक्ति मार्ग में भी किसी-न-किसी रूप में यह व्यापार करते हैं। जैसे कि यदि तुम मेरी यह मनोकामना पूर्ण कर दो तो मैं तुम्हारे लिये यह करूँगा, किन्तु अब जो व्यापार करना है भगवान से, वह अनोखा ही व्यापार होगा। दादी जी ने विश्वास दिलाया कि परमात्मा के साथ किया हुआ व्यापार निश्चय ही अविनाशी होगा, उसे कोई चोर लूट नहीं सकेगा, न ही उस पर किसी प्रकार का आय-कर का ख़तरा होगा। और वह यह कि अपने में जो भी बुराइयां हैं उन्हें ईश्वर को देना है तथा बदले में उनसे अविनाशी ज्ञान रत्नों का अखुट खजाना प्राप्त करना है।

अहमदाबाद के ख्याति प्राप्त उद्योगपति पद्म भूषण अमृतलाल जी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान के हम सभी आभारी हैं जिन्होंने हमारे लिये इस शिविर का आयोजन किया है। इस शिविर के द्वारा मनुष्य की बुद्धि पवित्र बनती है और उसमें सदबुद्धि का विकास होता है। आपने कहा मुझे आशा है यहाँ की शिक्षाओं के अनुकरण से हमें अवश्य ही स्व का दर्शन होगा तथा जीवन श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा मिलेगी।

रिलायन्स ग्रुप में विमल टैक्सटाइल्स के अध्यक्ष लाल भाई शाह ने कहा हम बहुत ही सौभाग्यशाली हैं जिन्हें इस ईश्वरीय दरबार में आने का अहोसौभाग्य प्राप्त हुआ है। यहाँ आने मात्र से ही मुझे ईश्वरीय आनन्द का आभास हो रहा है। आपने कहा यहाँ का परस्पर स्नेह, भाईचारा और सहयोग का वातावरण 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पुनीत भावना को उजागर करता है।

संस्थान के मुख्य प्रवक्ता जगदीश चन्द्र ने कहा कि व्यावसायिक तथा पारिवारिक जीवन के अतिरिक्त समाज का भी मनुष्य पर कुछ दायित्व है इसलिए उसका सामाजिक जीवन भी एक श्रेणी में गिना जाता है क्योंकि वह समाज की इकाई है। आपने कहा इन तीनों प्रकार के जीवन को सुखमय, शान्तिमय बनाने के लिये प्रेम, नम्रता, निःस्वार्थ तथा अनुशासन-प्रियता की जरूरत है। आपने कहा जिसमें परस्पर स्नेह, सहानुभूति नहीं वह घर, घर नहीं, नर्क है। आपने कहा जो शान्ति से जियेगा वही दूसरों को शान्ति से जीने देगा। इसके लिये कुछ त्याग करने की जरूरत है तभी संसार सुखमय बन सकेगा।

जयपुर के उद्योगपति मदनलाल शर्मा ने कहा सही अर्थों में धर्म को धारणा से जोड़ा जाना चाहिये किन्तु खेद है कि आज धर्म को सम्प्रदायों से जोड़ा जाता है जिसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। आपने कहा वास्तव में धर्म हमें पवित्र कर्म करना सिखाता है जिससे समस्त मानव जाति एकता के पुनीत सूत्र में बंधे। ऐसी प्रेरणा हमें धर्म ही देता है, न कि रुधिर की होलियां खेलने को उधत करता है। आपने आशा व्यक्त की कि इस शिविर में आये हुए समस्त उद्योगपति बन्धु एक नई प्रेरणा लेकर जायेंगे।

आत्मिक दृष्टि-वृत्ति ही पवित्रता की धारण करा सकती है

मृत्यु के भय से छूटना चाहते हो तो जीते-जी मरो

माऊँट आबू : आदरणीय जगद्गुरु माता महादेवी विश्व कल्याण मिशन बगंलौर ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि तथा अन्य भाई बहिनों के साथ।

नगरोटा सूरिया — प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में एक आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले डाक्टर, नर्सें, ब्र.कु.डा. गिरीश तथा ब्र. कु. राज बहन के साथ एक ग्रुप फोटो में।

माउण्ट आबू — सम्पूर्ण स्वास्थ्य परिचर्चा एवं राजयोग शिविर का उद्घाटन दृश्य। बहन ललिता राव, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, महाराष्ट्र, दादी प्रकाशमणि जी, डा. हरीश राव, उप डीन , गांधी मेडिकल कालेज, भोपाल, ब्र. कु. जगदीश चन्द्र, मुख्य सम्पादक, ज्ञानामृत मोमबत्तियां जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

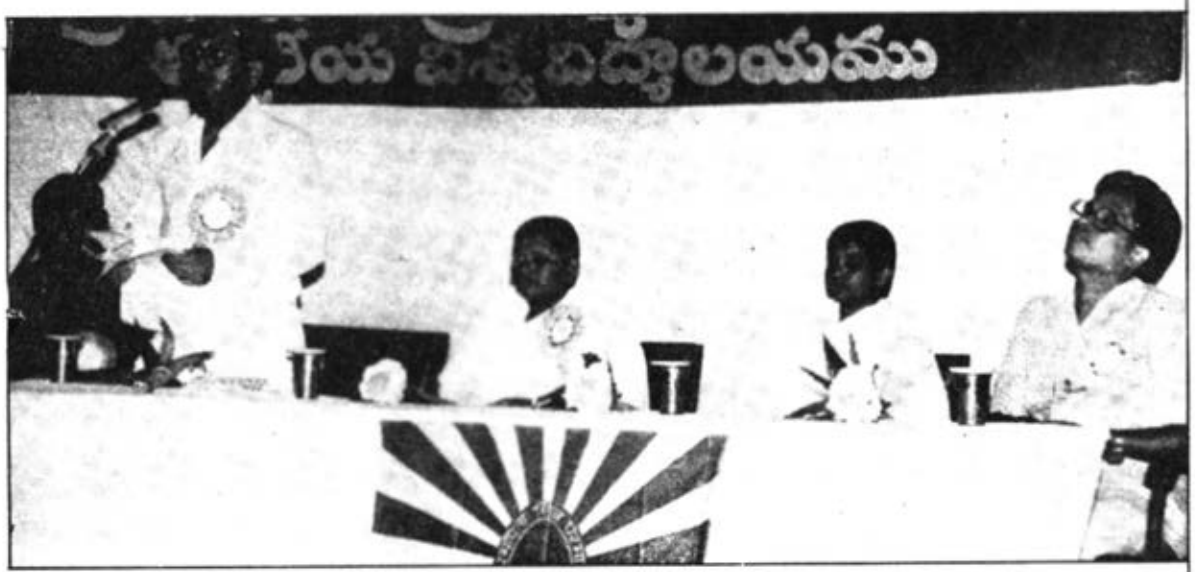

गुडीवाड़ा में आयोजित 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' के उद्घाटन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए भ्राता सूर्यनारायण, अधीक्षक, राजकीय अस्पताल।

गोकाक में आयोजित 'शिव दर्शन मानव जागृति आध्यात्मिक मेले' के उद्घाटन समारोह में भ्राता सी. आर. शिवपूजी, अतिरिक्त मुंसिफ भाषण देते हुए।

सम्पूर्ण स्वास्थ्य परिचर्चा एवं राजयोग शिविर

माऊण्ट आबू — यहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउन्डेशन के चिकित्सकीय प्रभाग द्वारा आयोजित चार दिवसीय अखिल भारतीय सम्पूर्ण स्वास्थ्य परिचर्चा एवं राजयोग शिविर के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए डॉ.ललिता राव भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री, महाराष्ट्र सरकार तथा अध्यक्षा मेडीकल एसोसिएशन एवं वर्तमान में महिला विंग की अध्यक्षा, ने कहा कि चिकित्सा जो कि मानवीय सेवा का एक महत्वपूर्ण अंग है किन्तु आज सेवाभाव को भुलाता जा रहा है। आपने आशा व्यक्त की कि यह राजयोग शिविर अवश्य ही इन चिकित्सकों को एक नयी प्रेरणा देगा। समाज की सेवा के लिये आपने कहा कि मुझे विश्वास है कि डॉक्टर तथा मरीजों के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भी यह शिविर कारगर सिद्ध होगा तथा मानसिक तनाव के कारणों को जानकर उसके निवारण के लिए भी उपयुक्त होगा। आपने कहा कि इसका प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि समाज के अनेकों प्रकार के तनाव-प्रद माहौल के होते हुए भी यहाँ आकर अभूतपूर्व मानसिक शान्ति का अनुभव हो रहा है।

संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी ने उपस्थित जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य ही सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति करा सकता है। आपने कहा आत्मिक शक्ति प्रबल है तो कर्म-भोग क्यों न कितनी भी भयंकर व्याधि के रूप में आकर चुनौती दे रहा हो तो भी दर्द को सहन करने की क्षमता बढ़ जाती है। दादी जी ने कहा कि चिन्ता मनुष्य के मन को दूषित कर देती है। इसीलिये कहा गया है कि खुशी जैसी खुराक नहीं, चिन्ता जैसा मर्ज नहीं। चिन्ता मर्ज को बढ़ाती है जो कि पल-पल रोगी को मृत्यु की ओर धकेलती है। आपने कहा कि यह सहज राजयोग मानव को चिन्ता-मुक्त जीवन जीने की कला सिखाता है। आपने राजयोग का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि योग अर्थात् ईश्वरीय याद और ईश्वरीय याद में रहकर जो कर्म किया जायेगा वह निस्संदेह ही श्रेष्ठ होगा तथा राजयोग से ही योग्यता में कार्यकुशलता आती है और कार्यकुशलता ही मनुष्य को आदर्श बनाती है तथा आदर्श मनुष्य ही समाज की प्रेरणा का स्रोत होता है। आपने कहा मैं आशा करती हूँ कि आप डॉक्टर जो तन को स्वस्थ करना जानते हैं, इसके साथ-साथ दुखियों के मन को भी स्वस्थ करने की कला को भी इस शिविर से सीख कर जायेंगे।

डॉ.हरीश राव, उप डीन, गांधी मेडीकल कॉलेज भोपाल ने कहा कि सहज राजयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों को खत्म करने के लिए तथा जब ये बीमारियां खत्म हो जायेंगी तब ही एक स्वस्थ एवं आदर्श समाज की पुनर्स्थापना की संकल्पना साकार हो सकती है।

संस्थान के आफीसर इंचार्ज ब्रह्माकुमार निर्वैर ने कहा कि यों तो आप समाज सेवा करते ही रहते हैं किन्तु इस शिविर से आपकी योग्यता के और अधिक विकास के लिए एक नयी दिशा मिलेगी, नयी प्रेरणा मिलेगी जिससे आप शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक स्वास्थ्य के लिए अपने मरीजों को जागृत कर सकने में समर्थ होंगे, यह आपके लिए एक स्वर्णिम सुअवसर है।

ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रिन्युअल के प्रधान सम्पादक जगदीश चन्द्र ने बताया कि आज विज्ञान द्वारा यह बात तो स्पष्ट हो ही चुकी है कि मन का प्रभाव अवश्य ही तन पर पड़ता है। अतः आज आवश्यकता है तन के साथ मन का भी उपचार करने की। यद्यपि कुछ हद तक इस क्षेत्र में विज्ञान कुछ कार्य कर भी पाया है किन्तु ये भी सभी जानते हैं कि कितने मनुष्यों की मानसिक चिकित्सा हो पाई है। जिसका तन भी स्वस्थ हो और मन भी स्वस्थ हो वह संकल्पना कितनी सुखद होगी। इसीलिए मानसिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये। आज व्यक्तिगत तनाव के साथ-साथ सामाजिक तनाव को भी देख ही रहे हैं। जब तक हम सामाजिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देते हैं तब तक सम्पूर्ण स्वास्थ्य की बात अधूरी रह जाती है। आपने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य ही दैहिक तथा सामाजिक स्वास्थ्य का श्वाँस हैं। आप संकल्पना कीजिये उस समाज कि जिसमें मानसिक शान्ति हो, निर्मलता हो, निर्विकारिता हो, सद्भावना हो और संतोष हो तथा यह संभव है सहज राजयोग के अभ्यास द्वारा। इस सत्र में डॉ० राधेश्याम अग्रवाल, हैदराबाद, डॉ० गिरीश पटेल, बम्बई आदि- आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

संगठन की रक्षा करना ही स्वयं की रक्षा है

□ शिव कुमार, पाण्डव भवन, दिल्ली

संगठन एक महान् शक्ति का सूचक है। संगठन को सर्व शक्तियों से सम्पन्न शक्तिवान एवं सुदृढ़ बनाने के लिए संगठन में एक तो सत्यता दूसरा पवित्रता और एकता की बहुत आवश्यकता है। यदि किसी संगठन में सत्यता और पवित्रता नहीं तो संगठन का कमजोर होना स्वाभाविक है और यही कमजोरी मनमुटाव अथवा अनुमान इत्यादि अनेक कमजोरियों के पनपने का कारण बन जाती है।

यदि संगठन में पवित्रता एवं एकता की कमी है तो संगठन अर्थात् संग में ठन-ठन होना भी स्वाभाविक है। यदि संगठन में ठन-ठन हो तो वह संगठन कभी भी सफलतामूर्त नहीं बन सकता। सच्चा संगठन अर्थात् जहां सत्य का संग हो। संगदोष से परे हो।

जहां हम प्रतिदिन आठ-दस व्यक्तियों के संग में रहते हैं अर्थात् संगठन में होते हैं और उनके साथ कार्य व्यवहार में भी आते हैं वहां प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसे मान मिले, रिगार्ड मिले। तो व्यवहार में एक-दो को मान (रिस्पेक्ट) देना जरूरी है। जितना हम दूसरों को मान देंगे उतना ही हमें अन्य भी देंगे। याद रहे—रिस्पेक्ट देना ही रिस्पेक्ट लेना है।

दूसरा, मान पाने के लिए हमें अपने स्वमान में रहना होगा। स्वमान में रहने से स्वभाव भी अच्छा हो जाता है,स्वभाव का टक्कर होता ही तब है जब संगठन में एक-दो को अर्थात् आत्मा का मान नहीं रहता। तो स्वमान अर्थात् आत्मा का मान।

हमें संगठन में रहते हुए अपने साथियों से स्नेही रूप और माया से ज्वाला रूप ही रहना है किन्तु अपने स्वमान को भूलने के कारण अपने कर्त्तव्य से भी विस्मृत हो जाते हैं।

जिस प्रकार किसी किले की अथवा देश की दुश्मनों से रक्षा करना जरूरी है, उसी प्रकार यह हमारा ईश्वरीय संगठन है, हमें कितना गर्व होना चाहिए कि हमारा संगठन ईश्वरीय संगठन है, सर्वश्रेष्ठ संगठन है और इसकी रक्षा करना हमारा ईश्वरीय कर्त्तव्य है। यदि किसी किले की दीवार में एक ईंट वा एक पत्थर भी कमजोर हो तो किला सुरक्षित नहीं हो सकता क्योंकि शत्रु तो छोटे सुराख से घुस सकता है। भले कहते तो एक ईंट की कमी किन्तु कमजोरी का तो चारों ओर फैलना स्वाभाविक है। तो संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए आपसी स्नेह, स्वच्छता और रूहानियत—ये तीनों ही बातें मजबूत हैं तो कभी किसी प्रकार का वार नहीं हो सकता। अगर किसी प्रकार का वार होता है तो समझ लेना चाहिए कि इन तीनों में से किसी न किसी की थोड़ी मात्रा में भी कमी है।

संगठन की रक्षा करना ही स्वयं की रक्षा है जैसे यदि किला सुरक्षित है तो किले में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित है। दूसरे शब्दों में किले को सुरक्षित रखने में ही सर्व की सुरक्षा है। ठीक इसी तरह स्वयं की रक्षा भी संगठन को मजबूत तथा सुरक्षित बनाने में ही है। संगठन को मजबूत बनाने के लिए सदैव याद रखें कि जैसे परिवार में मां अपने बच्चों को उन्नति हेतु अपने बच्चे की गलती इधर-उधर न फैलाकर वह स्वयं में समा लेती है। इसी प्रकार संगठन में रहते हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि जैसे हम अपनी गलती को इधर-उधर न फैलाकर स्वयं में समाए रखते हैं और उसे ठीक कर लेते हैं, इसी प्रकार हमें मां समान बन अन्य की भी गलती को न फैलाकर वातावरण को शुद्ध और निर्विघ्न रखना ही संगठन रूपी परिवार की रक्षा है। भले ही हमारा रक्षक स्वयं भगवान् है फिर भी हमें मास्टर रक्षक बन संगठन की हर प्रकार के विघ्नों से रक्षा करनी है। जब हम स्वयं सेफ्टी रखेंगे तो भगवान् भी हमारी सेफ्टी में मददगार बनेंगे। कहावत भी है भगवान् उनकी मदद करते हैं जो स्वयं अपनी मदद करते हैं (God helps those who help themself) यदि हम स्वयं अलबेले बन जाते अथवा अपनी सेफ्टी भूल जाते तो बाप के सेफ्टी में रहने के अधिकार से वंचित हो जाते हैं। जब हम अपनी सेफ्टी पर ध्यान देते हैं तो बाप की छत्रछाया अथवा सेफ्टी के अधिकारी स्वत: बन जाते हैं। □

रीवा (म.प्र.) — भ्राता वी. के. अग्रवाल तथा उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय उपहार भेंट करते हुए ब्र. कु. निर्मला।

प्रश्नोत्तर

"विघ्नों का कारण"-सूक्ष्म अपवित्रता

प्रश्न- जीवन में अनेक छोटे-मोटे विघ्न आते रहते हैं, कारण समझ में नहीं आता। हम कारण जानकर उसका निवारण करना चाहते हैं।

उत्तर- जीवन में अनेक विघ्नों का कारण क्या है ? कई बार कठिन मेहनत के बाद ही सफलता मिलती है, कभी वह भी नहीं मिलती। **इसका मूल कारण है– सूक्ष्म अपवित्रता।**

यों तो विघ्नों के कई कारण हैं। जिसमें पूर्व जन्मों के पाप कर्म, मनुष्य का सीमित दृष्टि कोण, व्यवहारिक अकुशलता और कमज़ोर मन मुख्य हैं। कमज़ोर मन विघ्नों को रोकने में असमर्थ होता है तथा सूक्ष्म अपवित्रता मानो विघ्नों का आह्वान करती है।

सूक्ष्म अपवित्रता क्या है? दैहिक आकर्षण, ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन, अपवित्र संकल्प और कामुक इच्छाएँ—ये सब विकृतियाँ स्थिति को भी कमज़ोर करती हैं व बुद्धि की निर्णय-शक्ति को भी समाप्त करती हैं।

अतः इस तरह यदि जीवन सूक्ष्म अपवित्रता से भरा है, तो न तो अमृत वेले योग में आनन्द आयेगा और न ही ईश्वरीय महावाक्य ही मन को परम सुख देंगे, न बुद्धि एकाग्र होगी और न चित्त शीतल होगा।

ऐसी आत्मा सेवा के क्षेत्र में भी मेहनत ज्यादा और सफलता कम का अनुभव करेगी। उनके सामने सदा ही टकराव की स्थिति बनी रहेगी, सम्बन्धों में तनाव रहेगा और मुख्यतः सेवा स्वरूप हुआ जीवन साधनों की माँग करता हुआ, साधना से कोसों दूर चला जायेगा।

चाहे लौकिक धन्धों में विघ्न आ रहे हों, चाहे लौकिक परिवार में, अनहोनी घटनाएँ घट रही हों या कुछ ग्रहचारी होने का एहसास होता हो, एक के बाद एक दुर्घटना हो रही हो या लौकिक नौकरी में विघ्न आ रहे हों, जीवन में खुशी न होती हो या बुद्धि भारी भारी लगती हो, पुरुषार्थी को अपनी पवित्रता की स्थिति को चेक करके कमजोरी को ठीक कर लेना चाहिए। स्थिति श्रेष्ठ होते ही विघ्न समाप्त हो जायेंगे। रास्ता साफ हो जायेगा और ऐसा लगेगा मानो मन से भारी बोझ उतर गया हो और मन एक अलौकिक खुशी का व हल्केपन का अनुभव करेगा।

पवित्रता के राही को सभी मर्यादाओं का पालन भी सहर्ष करना चाहिए। मर्यादा तोड़ते ही मन कमजोर हो जाता है और विघ्न प्रारम्भ हो जाते हैं।

पवित्रता की शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। हमें इस शक्ति का सम्पूर्ण एहसास हो। निकट भविष्य में जब अनेक बीमार व्यक्तियों की लाइन हमारे सामने खड़ी होगी, जब विघ्नों से व्याकुल आत्माएँ हमारे द्वार खटखटायेंगी, तब पवित्रता के बल से सम्पन्न आत्माएँ ही उन्हें अपनी दृष्टि से व्याधि-मुक्त व विघ्न-मुक्त कर सकेंगी।

पवित्रता ही जीवन में दिव्यता लाती है। अपवित्रता श्रृंगार को बिगाड़ देती है। जहाँ पवित्रता का बल है वहाँ विजय निश्चित है— यह जीवन में सम्पूर्ण विश्वास हो। तो पवित्रता का बल हमें कलियुगी सागर में, विघ्नों की भंयकर लहरों में भी आनन्द से तैरने का बल प्रदान करता है अर्थात् जीवन को निर्विघ्न व तनाव मुक्त बनाता है।

प्रश्न- कुण्डलिनी क्या है? कुण्डलिनी जागृत करना क्या है? राजयोग में इसका क्या स्थान है? क्या आपकी कुण्डलिनी जगी है?

उत्तर- कुण्डलिनी को साधकों ने शिव की शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। इसका रूप अति सूक्ष्म है। हम इसका संक्षिप्त वर्णन यहाँ करेंगे। यह शरीर में स्थित एक शक्ति है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने शरीर में आठ ग्रान्थियों का अस्तित्व माना है। प्राचीन काल से शरीर विज्ञान वेत्ताओं ने शरीर में सात चक्रों का अस्तित्व देखा था। आजकल खोजें प्रत्यक्ष दर्शन व प्रयोग शालाओं के आधार पर होती हैं। प्राचीन काल में खोजें अर्न्तदृष्टि द्वारा दर्शन के आधार पर होती थीं। ये ग्रन्थियाँ ही विभिन्न चक्र हैं। ये ग्रन्थियाँ ही सम्पूर्ण शरीर के विकास व नियन्त्रण की आधार हैं।

मस्तक में सहस्त्रार चक्र या ज्ञान केन्द्र अथवा पीनियल ग्लैण्ड (pineal gland) स्थित है। मेरू दण्ड अर्थात रीढ़ की हड्डी (spinal cord) के नीचे शक्ति केन्द्र, मूलाधार चक्र अर्थात् गोनाल्ड ग्लैण्ड (Gonald Gland) स्थित है। इस मूलाधार चक्र में एक त्रिकोण आकार का पद्म है। उसके अन्दर कुण्डली के आकार की साढ़े तीन चक्र में बैठी सूक्ष्म कुण्डलिनी शक्ति है। इस शक्ति का वर्णन वर्तमान शरीर-रचना के ज्ञाता तो नहीं करते, परन्तु प्राचीन

मनीषियों ने अन्तर्दृष्टि से इसके दर्शन किये थे।

मेरूदण्ड के भीतर दोनों ओर इडा व पिंगला नाम की दो नाड़ियाँ हैं जिनमें से एक मस्तिष्क में सन्देश ले जाती है व दूसरी मस्तिष्क के आदेश बाहर लाती है। इन दोनों के मध्य एक सूक्ष्म शून्य नाड़ी सुषुम्ना है। यह सुषुम्ना नाड़ी (स्नायु) नीचे से बन्द है और नीचे से कुण्डलिनी शक्ति से जुड़ी है, जो कि सुषुप्त अवस्था में है।

योगी यह मानते थे कि यदि इस कुण्डलिनी शक्ति को जागृत कर दिया जाए तो यह शक्ति सुषुम्ना नाड़ी से होकर ऊपर चलने लगती है। और विभिन्न चक्रों से होकर मस्तक में स्थित ज्ञान केन्द्र (Pineal gland) में पहुँच जाती है। यह शक्ति जिस जिस ग्रन्थी से गुज़रती है, उसमें विशेष प्रतिक्रिया होती है और जब यह शक्ति ज्ञान-केन्द्र में पहुँच जाती है तो योगियों को आत्म-ज्ञान तथा आत्म-साक्षात्कार हो जाता है। उसके जीवन में दिव्यता आ जाती है। मन अतीन्द्रिय सुखों में विभोर हो जाता है अर्थात् उसके सारे बन्धन कट जाते हैं।

इस शक्ति को जगाने का साधन, प्रभु-प्रेम, गुरु कृपा या कोई भी साधना है। किसी की यह कुण्डलिनी शक्ति थोड़ी जगती है, किसी की ज्यादा । यदि किसी मनुष्य में थोड़ा सा भी ज्ञान प्रकाश दिखे तो समझना चाहिए कि उनकी कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना में प्रवेश कर गई है।

ऊपर हमने संक्षेप में कुण्डलिनी शक्ति का वर्णन किया। अब हम अपने विचार व राजयोग के सम्बन्ध का विषय लें।

हमें स्वयं ईश्वर द्वारा ईश्वरीय ज्ञान मिला। प्रथम चरण में ही हमें आत्म-ज्ञान व आत्म-साक्षात्कार हो गया। ज्यों ज्यों हम राजयोग साधना के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, त्यों त्यों हमें हमारे आदि व अनादि स्वरूप का भी स्पष्ट साक्षात्कार होता जा रहा है। मन में अपार खुशियों की शहनाइयाँ बज रही हैं, अतीन्द्रिय सुख हमारा जीवन बन गया है अर्थात हमारी कुण्डलिनी सम्पूर्ण रूप से जग चुकी है।

भारतीय योग-दर्शन में योग-साधना का प्रभाव शरीर पर दुर्शाया गया है। प्राणायाम से शरीर में होने वाले परिवर्तन, ध्यान का स्नायुओं पर प्रभाव, मन-बुद्धि को प्रकृति कृत मानने के कारण योग को शरीर से जोड़ा गया।

यह तो सत्य है कि शरीर की समस्त क्रियाओं का संचालन मन की शक्ति से ही होता है। परन्तु मन शरीर का ही अंग है— यह मानना तो त्रुटि है।

हमें परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान से बोध हुआ कि मन, बुद्धि आत्मिक शक्तियां हैं। कहीं अन्यत्र ध्यान न लगाकर राजयोग में हम अशरीरी होने का अभ्यास करते हैं अर्थात् हम ज्ञानकेन्द्र के समीप स्थित आत्मा पर एकाग्र हो जाते हैं और इसका प्रभाव हमारी सारी स्नायु क्रिया (Nerves system) पर पड़ता है। इससे शरीर में विभिन्न परिवर्तन होते हैं।

यदि शरीर में कुण्डलिनी शक्ति विद्यमान है तो वह अवश्य ही राजयोग से जागृत होती है—यह सत्य हैं।

परन्तु इसका विश्लेषण दूसरी तरह से भी करना चाहेंगे। यह एक चिन्तन पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। मूलाधार चक्र (Gonald gland) में शक्ति का संग्रह होता है अर्थात शुक्र शक्ति एकत्रित होती है। जो कि निरन्तर अन्न से बनती ही रहती है। योग-अभ्यास में हम अशरीरी होकर अपनी बुद्धि परमधाम में स्थित परमात्मा से जोड़ते हैं। इससे उस शुक्र गति की स्थिति ऊपर की ओर हो जाती है। और वह सुषुम्ना नाड़ी के माध्यम से विभिन्न ग्रन्थियों से होती हुई पीनियल ग्लैण्ड (ज्ञान-केन्द्र) में चली जाती है। विभिन्न ग्रन्थियाँ इसका कुछ कुछ अंश ग्रहण करती रहती हैं और अन्त में उस शक्ति का सूक्ष्म अंश पीनियल ग्लैण्ड में पहुँचता है जो कि वास्तव में मस्तिष्क के लिए सूक्ष्म शक्ति (Energy) है जिसके द्वारा मस्तिष्क निरन्तर कार्यरत है।

इसी कारण, योग-अभ्यास के लिए ब्रह्मचर्य का प्रथम स्थान है। यदि कोई व्यक्ति ब्रह्मचर्य पालन नहीं करता तो उसकी शुक्र शक्ति निरन्तर नष्ट होती रहती है, इससे उसका मस्तिष्क पूरी तरह शक्ति प्राप्त नहीं कर पाता, फलस्वरूप न तो मन चिन्तन में स्थिर होता और न बुद्धि परमात्मा पर स्थिर होती।

शायद इस शक्ति को ऊपर ले जाना ही कुण्डलिनी को जागृत करना कहा है। कुछ भी हो, राजयोग में किसी भी शारीरिक क्रिया को कोई स्थान नहीं। हाँ राजयोग के द्वारा ये शक्तियाँ अवश्य ही जागृत होती हैं और जीवन दिव्यता से ओत-प्रोत हो जाता है।

प्रश्न- मनुष्य का विकास कब रुक जाता है ?

उत्तर- जब एक मनुष्य यह समझ बैठता है कि उसने सब कुछ जान लिया है। जब वह कुछ भी सीखने के लिए अपनी बुद्धि के द्वार बन्द कर लेता है अर्थात उसकी सीखने की वृत्ति ढक जाती है, जब वह शिक्षाओं से भयभीत होता है, जब वह उस मनुष्य को अपना शत्रु समझता है, जो उसे कुछ सिखाना चाहता है, तब मनुष्य की प्रगति का मार्ग रुक जाता है।

कई पुरुषार्थी यह समझ लेते हैं कि उन्होंने सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है। वास्तव में एक बुद्धिमान मनुष्य की यह सबसे बड़ी भूल है। उसे जानना चाहिए कि जब उसे सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जायेगा, उसकी बुद्धि का भटकना भी बन्द

हो जायेगा। उसकी बुद्धि डिस्टर्ब भी नहीं होगी, उसके चारों ओर के ममत्व भी मिट जायेंगे, स्थिति पूर्णतया उपराम हो जायेगी। इस सूक्ष्म अहं के कारण कई मनुष्य प्रतिदिन ईश्वरीय महावाक्य श्रवन भी नहीं करते और न ही उन्हें अध्ययन में रुचि रहती।

इसी प्रकार योग भी एक अत्यन्त सूक्ष्म विषय है। जब तक हम सम्पूर्ण बनें, हम योग की सूक्ष्म विधियों को व उसके सूक्ष्म अनुभवों को प्राप्त करते ही जायेंगे। इसलिए यह मान लेना कि हमने योग भी पूर्णतया सीख लिया है, बुद्धिमानी का परिचायक नहीं है। जब हम योग को पूरी तरह सीख लेंगे तो हम सम्पूर्ण बन जायेंगे। हम अपने आदि व अनादि स्वरूप में स्थित हो जायेंगे और हम निरन्तर अतीन्द्रिय सुख में रमण करते रहेंगे।

इसलिए जीवन में निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए सदा ही दूसरों से, जीवन में आने वाली परिस्थितियों से व पूर्व काल में की गई अपनी गलतियों से सदा सीखते रहने की वृत्ति अपनानी चाहिए और उस व्यक्ति को अपना सच्चा हितैषी व परम मित्र मानना चाहिए जो हमें कुछ सिखाना चाहता है। हम अपने सीखने के द्वार खोल दें। यदि हमें कोई सीख अच्छी नहीं लगती तो बुरा न मानें। हम अपना जीवन इतना लचीला बना दें कि समय पर हमें कोई सम्भाल सके, हमें कोई डांट भी सके, तब हमारा कभी भी अहित नहीं होगा।

प्रश्न- सुना है आपके विदेशों में भी बहुत सेवाकेन्द्र हैं। क्या वहाँ के लोग आपकी ब्रह्मचर्य की धारणा व खान-पान की शुद्धि अपनाते हैं? यदि ऐसा है तो सचमुच यह ईश्वरीय शक्ति है।

उत्तर- हमारे इस समय विदेशों में ४० देशों से भी अधिक में २०० के लगभग सेवाकेन्द्र हैं। जहाँ पर आने वाले लोग हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख व ईसाई सभी धर्मों के मानने वाले हैं। निस्सन्देह वहाँ का जीवन भारतीय जीवन से भिन्न है। यहाँ अभी तक भी ब्रह्मचर्य और सात्विक आहार में लोगों का विश्वास है, परन्तु वहाँ तो ब्रह्मचर्य को मूर्खता समझा जाता है। सम्भोग ही जीवन का सुख है— यही उनकी आम धारणा है। इसलिए वहाँ काम की नदियाँ चारों ओर खुले रूप से बहती हैं। लगभग प्रत्येक मनुष्य मांसाहारी है। उन ठण्डे प्रदेशों में लोग कभी कभी ही नहाते हैं।

परन्तु जब वे ईश्वरीय ज्ञान लेकर राजयोग के पावन पथ पर कदम रखतें हैं तो उनके जीवन का अद्भूत परिवर्तन स्वयं उनके लिए भी एक अविस्मरणीय गाथा बन जाता है। " वे क्या थे और क्या बन गये," " पशु तुल्य थे, मानव बन गये"— यह कहकर वे अपने जीवन-परिवर्तन की छवि का बखान करते हैं।

ब्रह्मचर्य अब उनका जीवन बन जाता है। होटलों व रेस्टोरेन्ट में अब वे जाना तक नहीं चाहते। उनका फिल्में देखने का शौक विलीन हो जाता है और त्यागमय जीवन की धारा में नित्य स्नान कर वे शक्तिशाली बनते जाते हैं। हमारे यहाँ मधुबन में प्रति वर्ष हजारों विदेशी आते हैं। उन्हें देखकर सभी को लगता है कि इन ब्रह्माकुमारियों ने इन्हें भी बदल दिया। उनकी श्वेत भारतीय पोशाक देख कर लोग उनके जीवन-परिवर्तन की प्रत्यक्ष झलक देख पाते हैं। वे बाजार में जाकर फल तो खरीदते हैं, परन्तु वहाँ की आइसक्रीम व मिठाईयों की ओर दृष्टि भी नहीं उठाते। अण्डे व लहसुन प्याज से अब उन्हें बदबू आने लगती है। यह है विदेशियों के महान परिवर्तन की तस्वीर....।

वे स्वीकार करते हैं कि वे भारतीय ही थे। किन्हीं कारणों से विदेश चले गये थे। अब अपनी मातृभूमि में पुनः लौट आये हैं। स्वयं को भारतीय कहने में वे गौरव का अनुभव करते हैं। सचमुच भारतीय सभ्यता कितनी महान है! यहाँ की शान्ति उन्हें बरबस खींच कर ले आती है। यहाँ के मनुष्यों की रौनक उन्हें यहाँ के यथार्थ स्वरूप का आभास दिलाती है।

तो विकारों के गर्त में पड़े इन लोगों को पवित्रता का बल मिला- राजयोग के अभ्यास से। राजयोग द्वारा सुखद ईश्वरीय अनुभूतियों ने इनके मन में भौतिकता के प्रति नीरसता जागृत कर दी। यह राजयोग का ही बल है जो मनुष्य को ब्रह्मचर्य का सुख सहज रूप से अनुभव कराता है। यह सत्य है कि ईश्वरीय शक्ति के बिना इस प्रकार से जीवन परिवर्तन प्रायः असम्भव ही है।

निकट भविष्य में जब देश विदेश के समस्त ईश्वरीय ज्ञान धारण कर रहे इन चेहरों पर जन समुदाय दिव्यता की झलक पायेगा, त्याग तपस्या से ओतप्रोत इनका जीवन देखेगा, तो उसे अवश्य ही इस महानतम ईश्वरीय शक्ति का आभास होगा। और तब उनके मुख से निकलेगा, ओह! जिसके प्रकाश से समस्त विश्व प्रकाशित हो उठा, उस दिये के तले बैठे हुए भी हमारे मन में अन्धकार ही रह गया।

बी. के. सूर्य, माउण्ट आबू

■ एक ईश्वरीय सेवा के बंधन से अनेक बंधन मिट जाते हैं। ■ नम्रता का गुण धारण करो तो सब नमन करेंगे।
■ संस्कारों के टक्कर से बचने के लिए बालकपन व मालिकपन का बैलेंस रखो।
■ रूप को न देख मस्तक मणि को देखो तो दृष्टि की चंचलता समाप्त हो जायेगी।

ईश्वरीय साहित्य का महत्व

करीब २१ वर्ष पूर्व १९६८ में मुझे उस पुस्तक का ध्यान आया जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सप्ताहिक पाठयक्रम नाम की पुस्तक थी और पूना शहर से गोवा शहर को रवाना होते समय मेरे दोस्त ने मेरी अटैची में डाल कर कहा कि इसे पढ़ना तो तुम्हें नया जीवन मिलेगा, असली जीवन मिलेगा। सेना में वायरलैस आप्रेटर होने कारण गोवा शहर में मुझे चार पाँच मास का वायरलैस का कोर्स करने के लिये ठहरना था। २०-२५ दिन तक पुस्तक को अटैची में रखने के बाद एक दिन रात्रि १०-३० बजे के करीब मैं पुस्तक को लेकर सड़क पर लगे एक बल्ब (Road light) के नीचे जा कर बैठा क्योंकि सेना में रात्रि १० बजे लाईट बन्द हो जाती है। पुस्तक का पहला पेज खोलते ही जब मैंने यह पढ़ा कि तुम कौन हो, कहां से आये हो, क्या लक्षय है आपका, क्या स्वधर्म है? आगे वाली लाईनें पढ़ने से पहले ही मैं अपने आप ही उत्तर देने लगा यह कोई गुह्य ज्ञान की बात नहीं क्योंकि मैं स्वयं को जानता हूँ कि मैं एक सैनिक, देश की रक्षा करना मेरा लक्ष्य, मैं पूना से आया वापिस मुझे चण्डीगढ़ जाना है। परन्तु जैसे ही मैंने आगे वाली पंक्ति पढ़ी कि आप शरीर नहीं शरीर से भिन्न एक दिव्य ज्योति स्वरूप शुद्ध आत्मा हो, यह शरीर तो आपका मंदिर है आप इसके मालिक हो, आप इस साकार सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, आपका वास्तविक घर परमधाम व शान्तिधाम है और आप का स्वधर्म शान्ति और पवित्रता है। ईश्वरीय साहित्य का यह सत्य ज्ञान पढ़ते पढ़ते मैं (देह से भिन्न एक चेतन सत्ता पवित्र आत्मा हूँ, इस अनुभूति में खो गया) मैं स्वयं को बार-बार देखने लगा कि वाह! सच में मैं आत्मा पवित्र स्वरूप, शांत स्वरूप, आनन्द स्वरूप हूँ। कुछ मिन्टों की इस अनुभूति ने मेरे में जो बुरे व्यस्न थे सिग्रेट, शराब आदि को संकल्प मात्र से भी त्याग करवा दिया क्योंकि सत्य ज्ञान सत्य जीवन की ओर ले जाता है।

पुस्तक में सात पाठ थे। कुछ दिनों की लगातार आत्मिक अनुभूति के बाद मैंने दूसरा पाठ पढ़ा जिसमें परमात्मा का पूर्ण परिचय मिला कि सर्व आत्माओं के परमपिता एक निराकार ज्योति स्वरूप शिव हैं जो वर्तमान समय एक साधारण तन, जिनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा है, के द्वारा एक नई दुनिया, सतयुगी दुनिया की स्थापना करा रहे हैं। ईश्वरीय साहित्य की इन पंक्तियों से मेरे मन में हलचल पैदा होने लगी कि मुझे तो गोवा शहर में ४-५ मास रहना है, कहीं परमात्मा ४-५ मास में नई दुनियां की स्थापना का कार्य पूर्ण न कर दें और मैं उनसे मिल भी न सकूँ। रात्रि करीब ११ बजे मच्छरदानी में बैठा मैं सोच रहा था कि परमात्मा शिव से और उस साधारण से जिसमें परमात्मा अवतरित हो चुके हैं कैसे मुलाकात हो। इतनी देर में मैंने एक साधारण बूढ़े और प्रकाशमय काया वाले अव्यक्ति को और उनके मस्तक में चमकता हुआ सूर्य देखा। पुस्तक के सात पाठ पढ़ते पढ़ते मुझे आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र और अनेक अदभुत राज़ मिलने के साथ एक रूहानी खुमारी, ईश्वरीय नशा, नारायणी नशा जागृत होने लगा।

जैसे ईश्वर के बारे में कथन है कि ईश्वर सर्व आत्माओं के भाग्य को जगाता है एसे ईश्वरीय साहित्य भी अनेक मूर्छित आत्माओं को सुरजीत करके ईश्वर से मिलाता है। ईश्वरीय ज्ञान मार्ग में चलने वाले अनेक बहन भाईयों के यह अनुभव होंगे कि ईश्वरीय साहित्य ही उनके जीवन को पलटाने का आधार बना। मुझे याद है कि मिलट्री की सर्विस में कुछ दिन के लिये मैं जबलपुर गया और वहां जाते ही मेरी भेंट एक ऐसे भाई से हुई जिसका बुरे व्यस्नों भरा जीवन बदल चुका था। वह खुद ही बतलाने लगा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की एक पुस्तक " महाभारत और गीता सार" को जब मैंने पढ़ा तो मेरी बुद्धि का ताला खुल गया क्योंकि मैं सच्ची गीता और महाभारत का वास्तविक रहस्य समझ गया था। पुस्तक पढ़ कर वह ब्रह्माकुमारी आश्रम पर सिर्फ यह पता करने गया कि इस पुस्तक के मुख्य सम्पादक, विश्व प्रसिद्ध लेखक भ्राता जगदीश चन्द्र हसीजा को यह संस्था कितना वेतन देती है। जैसे ही वह आश्रम पर पहुँचा तो बहनों ने कहा कि पहले आप ईश्वरीय ज्ञान का सात दिन का कोर्स करो उसके बाद आपको बता दिया जायेगा कि इस महान लेखक भ्राता जगदीश चन्द्र को यह संस्था कितना वेतन देती है। सात दिन के कोर्स और राजयोग के अभ्यास से वह सर्व राज़ समझ खुद दिव्य जीवन बनाने लगा।

शेष पृष्ठ ११ पर

"राजयोगी डॉक्टरों द्वारा स्वास्थ्य सेवा का कार्यक्रम"

स्वास्थ्य चेतना अभियान-II के उद्देश्य

बीमारी से छुटकारा पाने के लिए मानव सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है। अगर सेहत ठीक न हो तो हम जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय ने जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में स्वास्थ्य चेतना अभियान का आयोजन १२ मई से २८ मई ८९ तक किया था। इस अभियान के दौरान राजयोगी डॉक्टरों के एक दल ने लोगों को स्वास्थ्य से संबंधित आठ बातों के बारे में प्रशिक्षण दिया एवं इन विषयों में उनमें जागृति लाने का भरसक प्रयत्न किया।

(१) बीमारी के चिन्ह का अनुभव न होना ही स्वास्थ्य की निशानी नहीं है। बाहरी रूप से भले ही शरीर तंदरुस्त दिखाई दे परंतु शरीर के अंगों में गुप्त रूप से बीमारी फैल सकती है जो कि काफी समय के बाद रोग के लक्षण के रूप में महसूस होती है। इसलिए स्वास्थ्य रूपी संपत्ति को बचाने की हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए।

(२) जब हम स्वास्थ्य के विषय में जागृत करते हैं तब अधिकांश लोग शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में ही विचार करते हैं। परंतु शारीरिक स्वास्थ्य के साथ साथ मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य भी आरोग्य के महत्वपूर्ण अंग हैं। अगर एक व्यक्ति शारीरिक रूप से बीमार है तो वह स्वयं दुःख दर्द अनुभव करता है परंतु जो व्यक्ति मानसिक अथवा सामाजिक रूप से बीमार है वह दूसरों के लिए भी दुःख दर्द निर्माण करता है। मानसिक तनाव का असर शरीर पर भी होता है इसलिए मन को शांत एवं संतुलित रखने पर अधिक महत्व देना चाहिए।

(३) वैज्ञानिक अनुसंधान के द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि अनेक शारीरिक बीमारियों का मुख्य कारण मन में है। सरदर्द, अधिक रक्तदाब, एसीडिटी, डायाबीटीज (मधुमेह) आदि अनेक बीमारीयाँ मानसिक तनाव के कारण हो सकती हैं। मनःकायिक बीमारियाँ बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। इसलिए हर व्यक्ति को तनाव मुक्ति के उपाय सीखने चाहिएं ताकि हम उसे जीवन में अपनाकर अनेक बीमारीयों से बच सकें।

(४) बीमारी होने के बाद उसका उपाय करने के बदले उसे उत्पन्न होने से रोकना अनेक गुना बेहतर है। अधिकांश बीमारियाँ मानव निर्मित हैं जिसको रोका जा सकात है। उदाहरण के रूप मे हृदय से संबंधित बीमारियाँ होने के मुख्य आठ कारण माने गये हैं। (१) धूम्रपान (२) तनाव युक्त जीवन (३) व्यायाम की कमी (४) डायाबीटीज़ (५) टाइप-ए व्यक्तित्व (६) अधिक रक्तदाब (७) मोटापा (८) अनुवांशिकता

इन आठ कारणों में से सिर्फ अनुवांशिकता के सिवाय सभी कारणों को रोका जा सकता है। यह सभी कारण मानव निर्मित हैं।

(५) चिकित्सा का व्यवसाय समाज सेवा का व्यवसाय है जिसमें रोजी रोटी के साथ साथ अनेक लोगों की दुआ भी प्राप्त होती है। डॉक्टर एवं अन्य चिकित्सा क्षेत्र से संबंधित लोगों को यह सेवा भाव भी विकसित करना चाहिए।

(६) चिकित्सक एवं मरीज के संबंध जितने अच्छे हों उतना ही मरीज बीमारी से जल्द ही राहत प्राप्त कर लेता है। चिकित्सक को अपना स्वभाव एवं बोलने का ढंग ऐसा बनाना चाहिए जिससे मरीज़ को शांति एवं आशा का अनुभव हो।

(७) सहज राजयोग के अभ्यास से मानव को तनाव से मुक्ति मिलती है एवं आत्मविश्वास तथा मनोबल में वृद्धि होती है। योगाभ्यास शरीर में ऐसे परिवर्तन लाता है जिसके कारण स्वास्थ्य रूपी सम्पति बढ़ती है। योगाभ्यास से मस्तिष्क में एसीटाईल कोलीन (Acetile cholene) एवं सिरोटोनीन (Syrotonine) की मात्रा थोड़ी सी बढ़ती है जो कि स्वास्थ्य सुधार में मद्दगार होते हैं।

(८) धूम्रपान, शराब एवं अन्य मादक पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। इन व्यसनों का सेवन युवकों में काफी बढ़ रहा है। इस अभियान में विशेष रूप से इन व्यसनों से बचने एवं मुक्ति प्राप्त करने का मार्गदर्शन दिया गया।

अभियान का उद्घाटनः

जम्मू और कश्मीर के स्वास्थ्य मंत्री माननीय मिर्जा अब्दुल रसीद ने अपने प्रेरणादायक वचनों के द्वारा द्वितीय स्वास्थ्य जागृति अभियान का शुभ आरंभ श्रीनगर में दिनांक १३ मई ८९ को

किया। आपने बताया कि शरीर के साथ साथ मन को भी स्वस्थ रखना चाहिए। भारत के विभिन्न भागों से आये हुए डॉक्टरों का यह दल लोगों की काफी सेवा करेगा। आपने आगे बताया कि निस्वार्थ भाव से ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के डॉक्टर जो अभियान चला रहे हैं वह सराहनीय है।

इस समारोह की अध्यक्षा दादी चन्द्रमणि जी ने कहा कि डॉक्टर अपने कार्य में अति व्यस्त होते हुए भी लोगों की सेवा अर्थ इतना समय दे रहे हैं। अगर एक डॉक्टर अपने मरीज का स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए कुछ राय देता है तो मरीज अवश्य उसे अपनाता है। इसलिए इस अभियान के द्वारा अनेक लोग अपने जीवन में स्वास्थ्य के नियमों को अपना सकेंगे। आल इंडिया इन्सटिच्यूट के एसोसीयेट प्रोफेसर, डॉ उषा किरण ने अपना अनुभव बताते हुए कहा कि डॉक्टरों को मरीज़ों की सेवा पर पूरा ध्यान देना चाहिए एवं मरीज की बातों को अच्छी तरह सुनना चाहिए। मरीज से स्नेह युक्त व्यवहार भी उनके मानस पर स्वास्थ्य वर्धक प्रभाव डालता है। डॉ उषा किरण ने कुछ अनुसंधान का जिक्र करते हुए राजयोग के चिकित्सा के क्षेत्र में लाभ बताये।

मैसूर मेडिकल कॉलेज के भूतपूर्व प्रिंसीपल एवं फारमेकोलोजी विभाग के मुख्य डॉ. टी. एस. कन्दास्वामी ने मानसिक स्वास्थ्य के सुधार के लिए कुछ सुझाव दिये।

श्रीनगर में ११ और १२ मई को वहाँ के विभिन्न हॉस्पिटल, मेडिकल कॉलेज, आदि में कार्यक्रम आयोजित किये गये। " राजयोग द्वारा तनाव मुक्त जीवन " इस विषय पर वहाँ के मेन्टल हॉस्पिटल के सुपरिनटेन्डेट, सहायक सुपरिनटेन्डेन्ट, मुख्य चिकित्सक एवं अन्य कर्मचारियों के मध्य प्रवचन हुआ।

उन्हें बताया गया कि तनाव से छुटकारा पाने के लिए धूम्रपान, शराब एवं नींद की गोलियों का प्रयोग काफी हानिकारक है। इनकी आदत लगने पर उससे मुक्त होना काफी कष्टदायक होता है। तनाव-मुक्त जीवन के लिए हर्बट बेन्सन ने रिलैक्सेशन रिस्पोन्स निर्माण करने की विधि सीखने के लिए सुझाव दिया है। डॉ डेविड एच फ्रिन्क ने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने की राय दी है। माउन्ट आबू के डॉ बनारसी लाल ने सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी को रोचक रूप से स्पष्ट किया।

जम्मू एवं कश्मीर के मुख्य स्वास्थ्य संचालक एवं अन्य स्वास्थ्य आधिकारियों से चर्चा की गई। उन्होंने अनेक प्रश्न भी पूछे। उन्होंने कहा कि आज आप सभी से चर्चा करके मैंने काफी नई बातें भी सीखी हैं।

वहाँ की बोन एन्ड जाइन्ट हॉस्पिटल में स्वस्थ जीवन के दस सुनहरे नियम बताये गये। काश्मीर रेडियो पर डॉ कन्दास्वामी का प्रवचन प्रसारित हुआ। वहाँ की जवाहर लाल नेहरू हॉस्पिटल में डॉ. जयंत पटेल ने राजयोग के द्वारा ई.ई.जी. में होने वाले परिवर्तन स्पष्ट किये। राजयोग के अभ्यास के बारे में वहाँ के डॉक्टरों ने कुछ प्रश्न भी पूछे। बर्न् हॉल स्कूल में स्वस्थ्य जीवन के "सुनहरे नियम एवं आईये स्वास्थ्य की बातें करें" इन विषयों पर प्रवचन हुआ। स्कूल के प्रिन्सीपल रे.फा.डॉमीनीक ने इन विषयों की पूर्व भूमिका समझायी। प्रश्नों के उत्तर में उन्हें बताया गया कि हमें प्रतिदिन ८-९ ग्लास पानी पीना चाहिए। वहाँ की लाला रेड हॉस्पिटल, एस.पी.कॉलेज आदि में भी प्रवचन आयोजित किये गये थे।

दि. १५ मई को जम्मू शहर में अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये गये थे। वहाँ के मॉडेल इन्स्टीट्यूट आफ एजूकेशन एन्ड रीसर्च में १००० विद्यार्थीयों एवं शिक्षकों को स्वस्थ जीवन के दस सुनहरे नियम समझाये गये। वहाँ की बार एसोसियेशन नें ५० वकीलों के बीच " मन एवं स्वास्थ्य" इस विषय पर चर्चा हुई। स्थानीय मेडीकल कॉलेज में शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य के संतुलन का महत्व बताया गया। प्रिन्सीपल डॉ. एस. एल. वर्मा ने योग को प्रयोगात्मक रूप से जीवन में अपनाने की सभी को राय दी।

पॉलीटेकनिक कॉलेज में डॉ उषा किरण और डॉ मनोरमा बहन ने "स्वस्थ जीवन के लिये जीवन पद्धति" के विषय में स्पष्टीकरण किया। ओ.एन्.जी.सी. के वैज्ञानिकों के मध्य "तनाव —वर्तमान युग के लिये एक खतरा" —इस विषय पर परिचर्चा आयोजित की गयी। ओ.एन.जी.सी. के डायरेक्टर डॉ. खालिद ने वक्ताओं का आभार मान और ऐसे कार्यक्रम बार बार आयोजित करने का निवेदन किया। स्थानीय सेवाकेंद्र पर आम जनता के लिये एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की सहप्रशासिका दादी चंद्रमणी जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में निरोगी जीवन के लिये राजयोग को अपनाने की प्रेरणा दी। डॉ. उषा किरण, डॉ. जयंत पटेल, डॉ. बनारसी लाल ने अपने अनुभव सभी के सामने रखे। डॉ. कन्दास्वामी का इन्टरव्यू भी लिया गया। साथ साथ इन्स्टीट्यूट आफ इंजीनियर्स एवं सांभा शहर के सब डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल में डॉ. प्रताप कुमार ने "ध्यान एक औषधि" इस विषय पर प्रवचन दिया।

दि. १६ मई को कठूआ के हाईस्कूल में डॉ. जयंत पटेल का प्रवचन हुआ। वहाँ के गर्ल्स हाईस्कूल में डॉक्टर निरंजना बहन ने सभी को स्वस्थ्य जीवन के नियम समझाये। जेल में कैदीयों को भी स्वास्थ्य की शिक्षा दी गयी। जेल अधीक्षक श्री.चंचल सिंह ने इस अभियान की सराहना की। पुलिस लाईन में भी १०० पुलिस आफीसर तथा अन्य कर्मचारियों को सुस्वास्थ्य के लिये मानसिक स्थिरता का महत्व समझाया गया।

अखनूर की सिविल हॉस्पिटल में भी कार्यक्रम चला जिसमें वहाँ के समाज सेवक भ्राता शामलाल सर्राफ ने बीमारियों की रोकथाम एवं स्वास्थ्य में वृद्धि करने के लिये कदम उठाने की प्रेरणा दी। गर्वन्मेंट हाई स्कूल के ६०० विद्यार्थियों एवं शिक्षक वर्ग के मध्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। आर.एस.पुरा के प्राथमिक चिकित्सालय में तनाव मुक्त जीवन पर डॉ. निरंजना बहन ने प्रवचन दिया। सभी ने बहुत प्रश्न पूछे एवं अपने अनुभव में बताया कि आज तो आपने सागर की सिर्फ एक बून्द प्राप्त करायी है। वहाँ के ब्लॉक मेडीकल आफीसर डॉ कृपाल सिंह ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम २ मास में एक बार तो रखने ही चाहियें। साथ साथ गुरदासपुर (पंजाब) में बार एसोसियेशन में राजयोग के द्वारा सुस्वास्थ्य की प्राप्ति इस विषय पर प्रवचन हुआ। उन्हें सुस्वाथ्य को प्रदर्शनी समझायी गयी एवं योग का अभ्यास भी कराया गया था। चीफ मेडीकल आफिसर डॉ. जी.एस.जींसा ने भी भाग लिया।

पठानकोट में सेवा की धूम...

एक साथ अनेक सेवा के कार्यक्रम होने के कारण डॉक्टरों को तीन ग्रुपों में बाँट दिया था। डॉक्टरों का एक ग्रुप पठानकोट पहुँचा। पठानकोट की इंडियन मेडीकल एसोसीयेशन ने "राजयोग से चिकित्सा के क्षेत्र में लाभ" इस विषय पर प्रवचन रखा। डॉक्टरों को बताया गया कि राजयोग के अभ्यास से रोग का निदान करने की शक्ति बढ़ती है, अनेक बीमारियों का हम अच्छी तरह इलाज कर सकते हैं और मरीजों के साथ स्नेह युक्त व्यवहार होने से उन्हें संतुष्ट भी कर पाते हैं।

पठानकोट की बार एसोसीयेशन में "सुस्वास्थ्य के लिये मानसिक स्थिरता" इस विषय पर प्रवचन हुआ। वहाँ के इलाहाबाद बैंक और स्टेट बैंक आफ इंडिया के कर्मचारियों को भी स्वस्थ जीवन के सुनहरे नियम समझाये गये। रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, इंजीनीयर्स इन्स्टीट्यूट और महिला मंडल में भी सेवायें दी गयीं।

१८ मई को डॉक्टर के एक ग्रुप ने कांगड़ा की सिविल हॉस्पिटल में डॉक्टर्स, नर्सिस आदि से भेंट की। दूसरा ग्रुप ज्वाली पहुँचा वहाँ पर दो स्कूलों में एवं हॉस्पिटल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। स्कूल के विद्यार्थियों को कहानियों के आधार से स्वास्थ्य वर्धक आदतों को अपनाने की प्रेरणा दी। उसी दिन दोपहर में नग्रोटा के प्राथमिक चिकित्सालय में डॉक्टर एवं नर्सों के लिये 'ध्यान द्वारा उपचार' इस विषय पर प्रवचन किया गया था।

१८ मई को स्वास्थ्य जागृति अभियान धर्मशाला पहुँचा। वहाँ के तीन स्कूलों में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिये प्रवचन आयोजित किये गये थे। सिविल हॉस्पिटल में "तनाव मुक्त जीवन" इस विषय पर प्रवचन किया गया था। जिसे चीफ मेडीकल आफिसर डॉ.एस.के. मल्होत्रा ने सराहा। शाम को पुलिस लाईन्स में भी पुलिस आफिसर तथा अन्य पदाधिकारियों के मध्य में "राजयोग द्वारा सामाजिक स्वास्थ्य में सुधार" इस विषय पर प्रवचन हुआ।

धर्मशाला में दलाई लामा से भेंट

धर्मशाला में महामहिम दलाई लामा से भी अभियान के डॉक्टरों ने भेंट की। उन्हें इस अभियान का लक्ष्य बताया गया एवं सुस्वास्थ्य प्रदर्शनी के चित्र बताये गये। दलाई लामा जी ने कहा कि यह प्रदर्शनी जो कि वैज्ञानिक तरीके से बनाई गयी है, स्वास्थ्य की जानकारी लोगों तब पहुँचाने का बहुत अच्छा साधन है। उन्होंने इस अभियान की सफलता के लिये अपनी शुभकामनाएँ प्रदर्शित कीं और कहा कि इस प्रकार के अभियान एक साथ अनेक शहरों में करने चाहिएं।

१९ मई को पालमपुर में विभिन्न सेवायें की गयीं। वहाँ के सेंट पॉल्स् स्कूल में ३५० विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मध्य में वर्ष का विश्व स्वास्थ्य संस्थान का जो स्लोगन है 'आईये स्वास्थ्य की बातें करें', इस विषय पर प्रवचन हुआ। प्रिंसीपल ने भी भाग लिया। वहाँ के गवर्मेंट गर्ल्स हाई स्कूल में डॉ.मनोरमा कालिया ने विद्यार्थियों को स्वच्छता का महत्व बताया। एक विशेष कार्यक्रम गाँव के लोगों और माताओं के लिये भी आयोजित किया गया था। पालमपुर एग्रीकलचरल युनिवर्सिटी और रोटरी भवन में भी अभियान के कार्यक्रम रखे गये थे। साथ साथ गोपालपुर प्राथमिक चिकित्सालय में डॉक्टर, नर्सों, एवं आम जनता के लिये "राजयोग द्वारा उपचार" इस विषय पर समझाया गया। वहाँ के ब्लॉक डिवल्पमेंन्ट आफिसर श्रीमती महाजन ने कार्यक्रम में काफी अभिरूचि ली।

स्वास्थ्य से संबंधित अनेकानेक कार्यक्रम करते हुए एवं लोगों में स्वास्थ्य सुधार की जागृति लाते हुए यह अभियान २३ मई को मंडी पहुँचा। वहाँ पर

आई.टी.आई के २०० विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों के बीच डॉ.निरंजना बहन ने वार्ता दी। वहाँ की हॉस्पिटल में भी डॉक्टर्स, नर्सिस तथा मरीजों के लिये कार्यक्रम आयोजित किया गया। रोटरी क्लब में भी प्रवचन का आयोजन किया गया था जो वहाँ के प्रेसीडेंट भ्राता मल्होत्रा जी को काफी पसंद आया। वहाँ के डी.ए.वी स्कूल में भी विद्यार्थियों के लिये कार्यक्रम रखा गया था।

साथ साथ बिलासपुर सिविल हॉस्पिटल एवं टेकनिकल इन्स्टीट्यूट में भी योग द्वारा तनाव मुक्त जीवन इस विषय पर प्रवचन रखा गया था।

२५ मई को अभियान शिमला पहुँचा वहां भी डी.ए.वी स्कूल में विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के नियम समझाये गये जो वाइस प्रिन्सीपल बहिन रहेजा को बहुत पसंद आये।

सिविल हॉस्पिटल में भी डॉक्टरों के लिए विशेष प्रोग्राम रखा गया था। परिमहल में फेमिली वेलफेयर इन्स्टीट्यूट आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, मेडिकल कॉलेज शिमला आदि में स्वास्थ्य जागृति के प्रवचन हुये।

२६ मई को सोलन में आई.टी.आई, पुलिस लाईन, बार एसोसिएशन, आदि में स्वास्थ्य के विभिन्न पहेलुओं पर प्रवचन हुए। साथ साथ कसोली में रोटरी क्लब में, डिस्टिलेशन की फैक्टरी में एवं आम जनता के लिए प्रेरणादायक प्रवचन हुए। धरमपुर में भी टी.बी.हॉस्पिटल में डॉक्टरों एवं नर्सों के लिए प्रवचन का प्रोग्राम रखा गया था। २६ मई रात्री तक सभी ग्रुप चड़ीगढ़ पहुँच गये।

चंडीगढ़ में विभिन्न सेवाओं द्वारा अभियान का समापन

२६ मई शाम एवं २७ मई को चंडीगढ़ में सेवा के अनेक प्रोग्राम रखे गये थे।१०० वैज्ञानिकों को डॉ.उषा किरण जी ने स्वास्थ्य को ठीक रखकर वैज्ञानिक अनुसंधान में सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा दी। विभिन्न स्कूलों एवं होम्योपेथी मेडिकल कॉलेज में भी सेमीनार रखा गया था।

चंडीगढ़ के सभी प्रमुख अखबारों के रिपोटर्स के साथ भी ज्ञान गोष्टी रखी गई थी। करीब १२ रिपोटर्स एवं संपादक के बीच डॉ. प्रताप ने संक्षेप में अभियान के समाचार बताये। उन्हें मरीजों पर किये गये अनुसंधान भी बताये गये। राजयोग के अभ्यास के बाद तीन महीनों में ८५% सिगरेट पीने वाले, ७५% शराब पीने वाले, और ७२% अनिंद्रा के रोगी पूरी तरह स्वस्थ हो गये।

इसी तरह योग के अभ्यास से सिरदर्द के ५५% मरीज एवं एसीडिटी के ६४% मरीजों को काफी राहत मिली थी। शाकाहारी अन्न स्वास्थ्य वर्धक है इसके प्रमाण डॉ. निरंजना बहन ने दिये।

चंडीगढ़ की जनरल हॉस्पिटल में भी डॉक्टरों का स्नेह मिलन रखा गया। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, चंडीगढ़ में शाम को अपनी मीटिंग का आयोजन इस अभियान के समाप्ति समारोह के रूप में किया गया। इसका विषय था संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए मानसिक स्थिरता। मन को संतुलित एवं स्थिर बनाने के लिए नवरत्न बताये गये जो सभी को बहुत पसंद आये।

(१)मन की स्थिति का नियमन बाह्य वस्तु, व्यक्ति और वैभव से न हो परंतु आंतरिक हो क्योंकि जैसा हम विचार करते हैं वैसी ही हमारे मन की स्थिति बनती है।

(२) हर परिस्थिति में शुभ विचार करें। कोई भी परिस्थिति सामने आती है तो उसमें हमें क्या फायदा है यह विचार करें।

(३) अपने आपकी दूसरे के साथ तुलना न करें। आप एक विशिष्ट व्यक्ति हैं। आपका चेहरा दूसरे कोई भी व्यक्ति से मिलता नहीं है। इसलिए अपनी परिस्थितियों की तुलना भी दूसरों के साथ न करें।

(४) अगर दूसरे लोग आपकी टीका करते हैं तो उससे कुछ सीखकर अपने आप में परिवर्तन लायें। जो आपकी निंदा करता है उसे अपना मित्र समझें।

(५) बदला लेने की भावना न रखें परंतु अपने आपको बदल कर दिखायें, बदला लेने की भावना से तनाव बना रहता है।

(६) अगर किसी ने आपसे गलत व्यवहार किया हो तो उसे सदैव स्मृति में रखकर मन को अशांत करने के बदले उस व्यक्ति को माफ कर दें एव उसे भूल जायें।

(७) भूतकाल में जो भी बातें हुई हैं वह समाप्त हो गई हैं और जो बाते भविष्य में होने वाली हैं उनका अभी तक जन्म भी नहीं हुआ है इसलिए भूतकाल एवं भविष्य के विचारों को याद करके तनाव मोल न लें। वर्तमान आपके हाथ में है पूरा ध्यान वर्तमान पर दीजिये।

(८) परमात्मा, खुदा, ईश्वर, अल्लाह यह सभी एक ही सर्व शक्तिवान के विभिन्न नाम हैं। परमात्मा पर विश्वास रखने से मन को एक बहुत बड़ा सहारा मिलता है।

(९) ध्यान योग का अभ्यास सीखकर प्रतिदिन थोड़ा समय अभ्यास करने से जो मनः कायिक परिवर्तन होते हैं, वह मन को शांत, स्थिर एवं शरीर को निरोगी बनाते हैं। यह नव बातें सभी ने बहुत पसंद की और बताया कि इस की छोटी पुस्तक बनानी चाहिए ताकि हम उसे प्रतिदिन स्मृति में ला सकें।

इस प्रकार का अभियान भारत के दूसरे राज्यों में करने की राय सभी ने दी।

"आत्म-दर्शन"

ब्रह्माकुमार मोहन, माउण्ट आबू

कथासार

एक बालक हर रोज अपने पूर्वजन्म की स्मृतियों के दृश्यों में देखता है कि पिछले जन्म में वह राजा था। अब वो फिर से सिर पर राजमुकुट पहने राजसिंहासन पर अपने को बैठा देखना चाहता है। एक दिन उसे एक फरिश्ता बताता है कि तुम फिर से महाराजा बन सकते हो। तो क्या वो फिर से राजा बन पायेगा? यह कहानी सिर्फ एक बालक की है या हम सबकी भी? यह सब जानने के लिये प्रस्तुत है–नृत्य-नाटक: 'आत्म-दर्शन'

पहला दृश्य

[पर्दा खुलते ही मंच पर एक राज-दरबार में नृत्य-गीत चल रहा है। गीत के बोल हैं–

कमल-कुण्ड के ऊपर एक नगरी प्यारी-प्यारी।
स्नेह सुमन महकाये यह सुखदायी फुलवारी।।

इसके बाद कमल-कुण्ड के ऊपर बूढ़ा बापू अपने बालक को जगाता है और बालक चौंक कर उठता है।]

बापू: अरे, अभी तक सोया हुआ है! उठो बेटा, सुबह हो गई। देखो तो सूरज भी निकल आया... उठो, राजा बेटा उठो...

बालक: ये... मैं कहाँ आ गया हूँ? कहाँ है मेरा राज्य? कहाँ है मेरा ताज? कहाँ है मेरी हँसती हुई प्रजा? बापू, अगर आप मुझे थोड़ी देर और ना जगाते तो मैं अपना खोया हुआ राज्य प्राप्त कर लेता।

बापू: हाँ बेटा, तुम्हें अवश्य ही कोई सपना दिखाई दिया होगा।

बालक: नहीं, नहीं। यह सत्य है, सत्य है। बापू, यह स्वप्न नहीं हो सकता। बापू, मुझे जो रोज दिखाई देता है, वो सपना हो ही नहीं सकता। मुझे मेरा राज्य लेना है। मैं इसके लिये क्या करूँ?

बापू: बेटा, पूजा का समय हो गया है। चलो, मंदिर चलें। भगवान् तो सबकी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। शायद वह तुम्हारे भी सपने साकार कर दे।

बालक: हाँ बापू, मंदिर जरूर चलेंगे।

दूसरा दृश्य

आत्म-दर्शन स्वयं का दर्शन
आत्म ज्योति जगा ले।
बुझी हुई जगाकर ज्योति
स्वराज्य फिर पा ले।

आत्मा राजा कर्म-इन्द्रियों का
प्रजा यह इन्द्रियां सारी।
राजा अगर स्वराज पे बैठा
सुख सम्पत्ति हो भारी।

स्वराज्य की रक्षा कर तू
स्वयं का पहरा लगा ले।
आत्म-दर्शन....।

तू रथी, रथ तन यह तेरा
आगे मन रूपी घोड़ा।
पकड़ बुद्धि की लगाम हाथ में
संस्कारों वश दौड़ा।

भूला राही अपने पथ को
स्वदर्शन से पा ले।
आत्म-दर्शन...।

[बालक और बापू दोनों मंदिर में पहुँचते हैं। बापू पूजा करता रहता है पर बालक देखता रहता है इधर-उधर कि आवाज कहाँ से आ रही है। एक गीत बज रहा है]

[गीत पूरा होते ही बालक दरवेश को देखता है और जाकर पूछता है]

बालक: यह आत्म-दर्शन क्या है, इससे खोया हुआ राज्य कैसे प्राप्त होता है? दरवेश जी! मुझे बताइये, मुझे अपना खोया हुआ राज्य प्राप्त करना है।

दरवेश: बेटा, तुम अभी छोटे बच्चे हो। अभी तुम पढ़ो-लिखो...। यह तो तुम्हारे बूढ़े बापू के मतलब की बाते हैं।

बालक: नहीं, नहीं... मुझे बताइये ना... ये मेरे ही मतलब की बातें हैं।

(दरवेश बापू की ओर देखते हुए)

दरवेश: इस बच्चे के दिमाग में कुछ...

बापू: नहीं, ऐसी बात नहीं है। यह बालक रोज-रोज कोई न कोई सपना देखता है। कभी-कभी ध्यान में पूर्वजन्म की स्मृतियों को दृश्यों में देखता है।

दरवेश: तुम्हें क्या-क्या दिखलाई देता है और वो दिखाने वाला भी तो कोई होगा?

बालक: वो दिखाने वाला कौन है, ये तो मुझे भी पता नहीं है। पर मैंने देखा बहुत कुछ है।

दरवेश: अच्छा, बताओ तो तुमने क्या-क्या देखा?

(बालक अपनी कहानी सुनाता है)

बालक: तो सुनिये। जब मैंने पहला दृश्य देखा, तो मैंने देखा एक व्यक्ति जिसका नाम कर्ण था, बहुत सोना, चांदी, धन दान कर रहा था। उसको देखकर मेरे मन में विचार आया कि मैं इससे भी बड़ा महादानी बनूँ।

दृश्य तीसरा

[कर्ण दान कर रहा है। कर्ण दान करता है और उसे देखकर बालक अनूप से पूछता है]

बालक: अनूप, ये कर्ण रोज-रोज इतना सोना-चांदी दान करता है, इसके पास कभी समाप्त नहीं होता। यह इतना धन कहाँ से लाता है?

अनूप: यह तो बड़े राज की बात है।

बालक: राज की बात, वह कौनसी?

अनूप: वह ये कि कर्ण सुबह-सुबह भगवान् के पास जाता है और भगवान् से बहुत कुछ लेकर आता है।

बालक: मैं भी भगवान् से सब-कुछ लूँगा और बड़ा महादानी बनूँगा।

अनूप : (हँसते हुए) हा... हा... भगवान् से लेगा। अरे, ये मुँह-मसूर की दाल है? अरे भगवान् से लेना इतना आसान है क्या।

बालक : क्यों? कर्ण ले सकता है तो मैं नहीं ले सकता। इसमें कौनसी बात है जो मेरे में नहीं है। तुम मुझे सिर्फ इतना ही बताओ कि भगवान् से लेने की युक्ति क्या है?

अनूप : देखो, यह भगवान् से लेने के लिए ही तो रोज सुबह-सुबह इतना दान-पुण्य करता है। इसके लिये कठिन-से-कठिन तपस्या, बड़े-से-बड़ा त्याग करता है। इसी का फल तो इसे भगवान् इतना धन देता है।

बालक : हूँ... अच्छा तो यह बात है। मैं भी ऐसा पुरुषार्थ करूँगा और बहुत बड़ा महादानी बनूँगा।

भीष्म त्याग तपस्या से
कभी न मैं घबराऊँगा।
जन-जन की सेवा कर
प्रभु का सब-कुछ पाऊँगा।

चौथा दृश्य

[कर्ण भगवान् की राह पर चल रहा है। बालक भी उसी राह पर चल पड़ता है। एक भूत सुन्दर नारी का रूप धारण कर लेता है और बालक को फँसाने की कोशिश करता है]

सुन्दरी : छम... छम... छम... छम... छम... छम...

बालक : ये तुम मुझे किसका प्रलोभन दे रही हो... अपनी सुन्दरता का?

नश्वर है तेरी सुन्दरता
इसका क्या है मोल
हाड-मांस का यह पिंजर,
अन्त है खोसम खोल।
तेरा असली रूप तो यही है ना?

(एक बुढ़िया को दिखाते हुए) हा-हा-हा-हा-हा ....

(एक पहाड़ को पार करते हुए कर्ण)

कर्ण : ये-ये तो बहुत कठिन मंजिल है।

(इस प्रकार बालक आगे बढ़ जाता है और कर्ण पीछे रह जाता है)

बालक :

कर ली मैंने अखण्ड तपस्या
सर्वस्व कर दिया त्याग।
मेरी विश्व सेवा को देख
भगवन् खुश हो जायेंगे आज।
और मैं भगवान् से कहूँगा—
भगवन् आप तो दाता हैं
अपना सब-कुछ दे दो आज।
आपका सब खज़ाना पाकर
सेवा करता रहूँ दिन-रात।

पांचवां दृश्य

[बालक भगवान् का दरवाजा खटखटाता है। भगवान् का दरवाजा खुलते ही दो हाथ वरदानी की ओर बढ़ते हैं। गीत और परियों का नृत्य होता है]

भगवान : आज तुझे कुछ देने के लिये भरपूर हैं परमपिता के हाथ।
पा ले जितना जी चाहे वत्स तू, प्रसन्न है तुझपे तेरा बाप।।

[बालक की झोली में स्थूल-सूक्ष्म वैभव, फूल आदि गिरते हैं। झोली भरने के बाद]

बालक : पाकर आपके अनुपम वरदान
मैं धन्य-धन्य हुआ भगवान्।

बालक : अरे, कर्ण भी आ रहा है। देखें, भगवान् इन्हें क्या-क्या देते हैं।

[बालक छुप कर खड़ा हो जाता है। कर्ण दरवाजा खटखटाता है पर दरवाजा खुलता नहीं]

कर्ण : भगवान्! भगवान्, मैं आ गया हूं! मैं आ गया हूँ, भगवन्! अरे यह क्या? भगवान् आज सो गये हैं?

भगवान् : कौन?

कर्ण : मैं, मैं कर्ण, प्रभु!

भगवान् : करने वाला तो करके चला गया है।

(कर्ण हाथ मलता रहता है)

भगवान : कभी-कभी पीछे आने वाले
भगवान से इतना पाते हैं।
थोड़ी-से देर के कारण
कोई हाथ मलते रह जाते हैं।

[कर्ण खाली झोली जाता है। कोई भिखारी मांगता है पर उसके पास कुछ नहीं है। पीछे बालक खूब दान करता आ रहा है]

भिखारी : अरे यह क्या? कर्ण के पास कुछ भी नहीं और बालक, महादानी हो गया!

(दृश्य समाप्त)

(फिर दरवेश ने पूछा)

दरवेश : तो फिर क्या हुआ?

बालक : फिर एक दिन, मैं और कर्ण घूमने निकले। साथ में कुछ और लोग जो हमसे रोज दान लेते थे वो भी चल रहे थे। घूमते-घूमते हम सभी प्राकृतिक सौन्दर्य को देखते दूसरे राज्य की सीमा तक पहुँच गये।

छठा दृश्य

[कर्ण आगे और बालक पीछे चल रहा है। कर्ण को सीमा के एक कदम पहले कांटा चुभ जाता है। वो वहीं बैठ जाता है और बालक सीमा पार कर जाता है। वहाँ छुपे हुये लोग उसे पकड़ लेते हैं। उन आदमियों को देख वह डर जाता है और सामने खड़े साधु के वेष में राजगुरु को देख उसकी ओर भागता है]

बालक : छोड़ दो, मुझे छोड़ दो, छोड़ दो मुझे। मैंने ऐसा क्या पाप किया है जो मुझे आप लोगों ने पकड़ लिया है। छोड़ दीजिये।

(राजगुरु को देखकर)

स्वामी, मुझे बचाइये, मैंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया है जो मुझे इन सबने पकड़ा है। मेरा ऐसा कोई दोष नहीं। कृपया मुझे बचाइये। मेरे यह कौनसे कर्मों का फल है, स्वामी? कौनसे कर्मों का फल है?

राजगुरु : यह आपके अपने ही कर्मों का फल है।

सुकर्म रूपी बीज किसी को
राजतिलक दिलाते हैं
विकर्म किसी के कांटा बन मिलता
राज गंवाते हैं।

हे महान् पुरुषार्थी आत्मन्, आज आप इस राज्य के राजा बन गये।

बालक : मैं... और राजा?

(सभी मिलकर एक साथ बोलते हैं)

सभी : महाराज की जय हो।

(कर्ण के कंधे पे हाथ रखकर)

राजगुरु : और यह इस राज्य के?

सभी : महामंत्री की जय हो!

राजगुरु : बाकी सब पीछे आने वाले?

सभी : सुखी प्रजा की जय हो!

बालक : इस रहस्य को हम समझे नहीं।

राजगुरु : इस राज्य के राजा का देहांत हो गया था और सभी पंडित विद्वान् सोच रहे थे कि इस राज्य का दूसरा राजा कौन हो? इतने में आकाशवाणी हुई कि पूर्व दिशा से इस राज्य की सीमा रेखा में प्रवेश करने वाला व्यक्ति कर्म और भाग्य का धनी है। वही इस राज्य का राजा होगा और दूसरा उसके पीछे आने वाला कर्म श्रेष्ठ है। वह इस राज्य का महामंत्री होगा और इनके पीछे आने वाले कर्मफल के अनुसार इस राज्य की प्रजा होंगे।

कर्ण : हाँ, सत्य है। मैंने भगवान् से लेते समय कुछ देर की थी, वही आज मुझे कांटा बनकर चुभी है।

प्रजा : और हम सभी तो इनसे दान लेते ही रहे हैं, तो प्रजा ही तो बनेंगे। अवश्य बनेंगे।

राजगुरु : भगवन् की वाणी के अनुसार आप इस राज्य के राजा हैं। चलिए, भरपूर सुखों से भरा अपना राज्य संभालिये। ये सब आपका स्वागत करते हैं।

दृश्य सातवां

[ढिंढोरची ढिंढोरा पीट रहा है]

ढिंढोरची : सुनिये, सुनिये जरा गौर से, फिर बात करना किसी और से। आज हमारे नये राजा का राज्य-अभिषेक होने वाला है।

राजगुरु : इस महान् राज्य के निवासियों की ओर से महापराक्रमी, महावरदानी महाराज को इस राजसिंहासन पर विराजमान होने के लिये मैं आमंत्रित करता हूँ।

सभी : महाराज की जय हो।

[फूलों की वर्षा और जयजयकार के नगाड़ों के साथ राजा को लाया जाता है। राज दरबार में गीत नृत्य के साथ राजा की ताजपोशी होती है]

राजगुरु : राजन्, इस राज्य की बागडोर अब आपके हाथ में है। इस राज्य की रक्षा करना आपका परम कर्त्तव्य है। अपनी प्रजा से पिता और पुत्र जैसा व्यवहार करना राजा का पहला गुण है। राजा के सिर का ताज राज्य की हर चीज की जिम्मेदारी का ताज है।

राजा : इस सुखदायी राज्य और आज्ञाकारी सदाचारी राज्य निवासियों को पाकर मैं अद्भुत सुख और अति हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। मेरी यह प्रतिज्ञा है कि इस राज्य की रक्षा और राज्य निवासियों के सुख-चैन के लिये मैं अपना सब-कुछ न्यौछावर कर दूँगा।

(दृश्य समाप्त)

दरवेश : तो फिर क्या हुआ?

बालक : तो सुनिये।

दृश्य आठवां

[राजा कुछ व्यसनों में फँस जाता है और इसी कारण रोग-ग्रस्त होता है। वह बीमारी की अवस्था में पड़ा है और वैद्य उसे कुछ बताते हुए]

वैद्य : राजन्, आपकी परम पीड़ा और कर्म-इन्द्रियां शिथिल होने का कारण हैं—ये व्यसन। इन्हें त्यागने में ही आपकी रक्षा है। इन्हें त्यागें और अपनी रक्षा करें।

राजा : अब तो यह सब मेरे अंग बन गये हैं। इन्हें छोड़ा कैसे जाये, शरीर से तोड़ा कैसे जाये? और अब मेरे में यह तोड़ने की शक्ति भी तो नहीं रही।

दृश्य नौवां

[राज्य के लोग अलग-अलग जगह राजा के बारे में बातें करते हुए]

राम् : अरे भैया, कुछ सुना तुमने?

शाम् : क्या, क्या?

काम् : सुना था हमारा राजा बहुत गुणवान है। राजगद्दी पर बैठते ही उसने अपने को व्यसनों में डूबो दिया। प्रजा के दुःख उसको दिखाई नहीं देते।

धाम् : हाँ, हाँ, यह ठीक ही तो कहता है। वो राजा ही कैसा जिसको प्रजा की फिकर ही न हो।

शाम् : धिक्कार है ऐसे राजा को...

राम् : हाँ, हाँ, देखो ना कर्मचारी भी राजा की असावधानी का नाजायज फायदा उठा रहे हैं। क्यों भैया?

शाम् : हाँ, राजा तो अपने ऐशो आराम में मस्त है। भोग-विलास ने उसे अंधा कर दिया है।

राम् : हाँ, देखो ना कर्मचारियों पर भी तो उसका अंकुश नहीं रहा।

काम् : और कर्मचारी भी अपनी इच्छानुसार प्रजा पर अत्याचार कर रहे हैं।

शाम् : अरे वो भी कोई राजा होता है, जिसे अपने राज्य की सुरक्षा का ध्यान ही न हो।

राम् : हां, शेर जैसा राजा बिल्ली बने बैठा है और दूसरे राज्य के लोग हमारे राज्य को आँख फाड़-फाड़ कर देख रहे हैं।

काम् : मैंने तो और एक बात सुनी है।

शाम् : अच्छा! क्या, क्या?

काम् : अपने राज्य के सैनिक राज्य को बड़ी ललचाई हुई नजरों से देख रहे हैं।

राम् : अभी तो राजा में ना शारीरिक, ना आत्मिक शक्ति रही। मुझे तो ऐसा आभास होता है, कहीं अपनी ही प्रजा, राजा को...

[दूसरी ओर से एक आदमी भागता हुआ आया]

धाम् : अरे, कुछ सुना आप लोगों ने?

सभी : क्या है, क्या है? बोलो ना।

धाम् : अपने राज्य के सैनिकों ने राजा को बन्दी बना लिया है।

सभी : हाँ!

दृश्य दसवाँ

[राजा बन्दी बना हुआ दुःखी अवस्था में]

राजा : हे प्रभु, मेरी रक्षा करो, मेरी ही प्रजा ने बन्दी बना लिया है मुझे।

[सामने साधु आता है]

साधु: ओ... तो अब तुझे भगवान् याद आया है!

राजा: महाराज, मेरी कुछ रक्षा करो। शायद आप मेरे पास भगवान् का रूप धारण कर आये हैं।

साधु: राजन्, अपने-आपको पहचानिये। अपना आत्म-दर्शन कीजिये।

राजा: मैं कैसे आत्म-दर्शन करूँ? मेरे में शरीर और आत्मा की शक्ति रही ही नहीं है। मैं इस प्रजा के बंधनों से छूटूँ तभी तो आत्म-दर्शन करूँ?

साधु: राजन् यही तो जानने की बात है। एक राजा के रूप में तो आप अपने सैनिकों के बन्दी हो गये हैं। दूसरे रूप में भी आप राजा हैं जिसकी आपको अनुभूति नहीं।

राजा: वो कौनसा मेरा रूप है, जो मुझे ही दिखाई नहीं देता है?

साधु: वो यह कि एक तो आप शारीरिक रूप में राजा हैं। दूसरा आप आत्मिक रूप में राजा हैं, और कर्म-इन्द्रियाँ हैं प्रजा। आप अपनी कर्म-इन्द्रियों रूपी प्रजा के गुलाम हो गये हैं। अब फिर पुरुषार्थ कर दोहरा राज्य प्राप्त करें। इसलिए तुझे भगवान् ने याद किया है।

राजा: भगवान् ने मुझे याद किया है? मैंने तो, क्षण-भंगुर सुखों में भगवन् को भुला दिया था। भगवन् ने मुझे याद किया है?

[साधु का रूप बदली होकर वह साधु यमदूत बन जाता है]

यमदूत: हा...हा...हा... भगवान् ने तुम्हें याद किया है।

राजा: नहीं, नहीं, अभी मुझे थोड़ा समय आत्म-दर्शन करने का चाहिए। सिर्फ कुछ क्षण दे दीजिये।

यमदूत: अब नहीं... अब बहुत देर हो चुकी है। हा... हा... हा... हा... हा... हा...

राजा: नहीं, मुझे आत्म-दर्शन करना है। आत्म-दर्शन करना है मुझे, मुझे आत्म-दर्शन करना है। मुझे आत्म...

[आत्म... आधा शब्द बन्दी राजा के रूप में बालक के मुख से निकलता है]

(दृश्य समाप्त)

बालक: 'दर्शन' करना है। आत्म-दर्शन करना है। आप बताइये, मैं कैसे राह प्राप्ति करूँ?

दरवेश: यह तो तुम उसी से पूछना जो तुम्हें रोज-रोज दृश्य दिखाता है।

दृश्य ग्यारहवाँ

[इतनी बातें सुनते ही बालक ध्यान में चला जाता है और पंछियों का दृश्य दिखाई देता है]

एक दिन सांझ ढले इस जग में
पंछी कर रहे थे पुकार।
जाना है घर वापस हमको
भूले हुए थे सब ही राह।
इतने में एक फरिश्ता आया
देख पंछियों को मुस्काया।
उसकी मस्तकमणि में सबने
एक अद्भुत कौतुक था पाया।
वो रचता था इस सृष्टि का
ब्रह्मा बाबा था उसका नाम।

पंछी बोले:–

पा लिया जो पाना था हमने
आपके इन दो नयनों में।
सृष्टि-चक्र का राज है जाना
आपको हमने खूब पहचाना।
आपकी भ्रकुटि में चमके
वही तो है शिव निराकार।
निश्चित है आपकी ज्योति से
मिलेगी उस मंजिल की राह।।
जाना है घर वापस.....
हाँ-हाँ बच्चो आपकी खातिर तो
पड़ा है बाप को आना।
भाग्यशाली हैं वो बच्चे
जिन्होंने इस राज को जाना।
अपने बच्चों के लिए
लिया है मैंने तन साकार।
आया आबू की धरा पर
सुन आत्माओं की पुकार।

पंछी बोले:–

जाना है घर वापस हमको
मिल गई है हमको राह।
जाना है घर वापस हमको
मिल गई है हमको राह।
मिल गई है हमको राह.....

[गीत पूरा होते ही बच्चा बापू से बात करता है]

बालक: (सोचता है) भगवान् आबू में आये? (बापू से) बापू यह आबू कहाँ है? अब मुझे लगता है कि वहां मेरी सर्व आशाएं पूर्ण हो जायेंगी।

बापू: तूने फिर कुछ देखा है क्या?

बालक: बापू, आज मैंने साक्षात् एक फरिश्ते को देखा। उसके मस्तक में एक ज्योति थी। वही भगवान् थे और वह आबू पर्वत पर आया हुआ है, ऐसा उस फरिश्ते ने बताया है। बापू मुझे आबू ले चलिये ना।

बापू: ठीक है बेटा, वहाँ भी चलकर देख लेते हैं।

दृश्य बारहवाँ

[बालक और बापू दोनों आबू-पर्वत पर ब्रह्माकुमारी आश्रम में पहुंच जाते हैं]

बालक: (प्रवेश करते ही) यहाँ का वातावरण तो बहुत अच्छा है। यहाँ की चीजें कितनी अच्छी हैं!

ब्र०कु०: जिनकी बनाई हुई चीजें इतनी अच्छी लगती हैं जब आप उनको देख लेंगे तो कितना अच्छा लगेगा!

बालक: यही बात जानने के लिये तो हम यहाँ आये हैं।

ब्र०कु०: साथ-साथ अपने आपको जानना भी बहुत जरूरी है। वास्तव में, सबसे पहले यहाँ यही बताया जाता है कि आप कौन हैं, आपका पिता कौन है और आप कहाँ से आये हैं? आपका घर कौनसा है? तो बैठिये और अपनी पहचान करिये। इसे कहा जाता है–आत्म-दर्शन।

मैं आत्मा हूँ... मैं आत्मा हूँ... मैं आत्मा

हूँ... मेरी शक्तियाँ–मन, बुद्धि, संस्कार...
ज्योति से घर में है प्रकाश
जहाँ नहीं धरती आकाश।
ज्योति सागर का प्रकाश हूँ...
मैं आत्मा हूँ...
शान्ति रूप में करूँ विश्राम
घर मेरा है शान्तिधाम।
शान्ति सागर की संतान हूँ... मैं आत्मा हूँ...
मुझमें भरे हैं गुण अपार
गुण सागर ने किया शृंगार।
गुणों का मैं करती दान हूँ... मैं आत्मा हूँ...

बालक: यह तो मेरी ही पहचान मिल गई है। लगता है मुझे मेरा राज्य फिर से मिल जायेगा।

ब्र०कु०: आपका राज्य? वह कौनसा?

बापू: माफ कीजिये बहन जी, यह इसके पूर्वजन्म की स्मृतियां हैं।

बालक: हाँ... हाँ... मैंने अपने पिछले जन्म और राज्य का साक्षात्कार किया है और उसे फिर से प्राप्त करने इधर आया हूँ।

ब्र०कु०: आप एक जन्म की बात करते हैं, यहाँ तो निराकार शिव परमात्मा ८४ जन्मों का राज बताते हैं।

बालक: निराकार शिव?

ब्र०कु०: हाँ... हाँ... आईये तो, मैं आपको दिखाती हूँ। वही निराकार परमात्मा शिव साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर ज्ञान देते हैं।

[बच्चा ब्रह्मा बाबा के चित्र को देखता है]

बालक: यही तो वह फरिश्ता है जिसने मुझे यहाँ की राह दिखाई है।

ब्र०कु०: हाँ, हाँ इन्हीं के ही तन द्वारा परमात्मा सर्व आत्माओं को स्वर्ग का राज्य दे रहे हैं।

बालक: तो क्या हम भी परमात्मा से मिल सकते हैं?

ब्र०कु०: हाँ, हाँ वह शिवबाबा, अव्यक्त ब्रह्मा बाबा के द्वारा अभी भी बच्चों की पालना कर रहे हैं।

[गीत बजता है जिसके दौरान बालक को बाबा की कई भुजाओं का साक्षात्कार होता है]

हजारों बाँहें खोल के बाबा
बच्चों को बुलाते हैं।
समा कर ज्ञान-भुजाओं में
वो शक्तियाँ भरते जाते हैं।
करें अपने बच्चों का शृंगार
दे शिक्षाओं का सार।
सागर वो अमूल्य रत्नों का
जिसमें ज्ञान अपार।
वो अपनी चैतन्य मणियों को फिर से
अब चमकाते हैं।
हजारों बाँहें खोल के बाबा.....

बच्चा: (गीत समाप्त होते ही) बस, मैंने अब पा लिया जो पाना था। बाबा आपको सम्मुख पाकर मैंने सब-कुछ पा लिया है।

बाबा: बच्चे, परमात्मा पिता की श्रीमत पर चलने वाले बच्चे ही सतयुगी दैवी स्वराज्य के अधिकारी बनते हैं। ऐसे पुरुषार्थी बच्चों के लिये ही परमपिता परमात्मा हथेली पर स्वर्ग की सौगात लेकर आया है।

अब आत्म-दर्शन करो कि तुम आत्माओं ने ८४ जन्मों का चक्र लगाया है। सो अब फिर से आत्म-दर्शन करो और चलो, स्वर्ग के मालिक बनो। यही है परमपिता परमात्मा शिव की सौगात।

[गीत बजता है]

सुखी है राजा सुखी है रानी
सुखी है प्रजा सारी।
स्वर्ग लोक की महिमा सुन्दर
दुनिया है अति न्यारी।
हर चेहरे पे जहाँ मुस्कान
दैवी गुणधारी इन्सान।
पावन दृष्टि की शोभा
हर सूरत सजी-संवारी।
प्रकृति जहाँ उपकारी है
हर वैभव सेवाधारी है।
राधे-कृष्ण संग रास रचाये
पहने ताज नर-नारी।
सुखी है राजा.....

[नाटक समाप्त]

अनमोल ईश्वरीय महावाक्य

मीठे बच्चे

- सर्व गुण सम्पन्न बनने के लिए हरेक के गुणों को देखो। परिस्थितियों व माया का सामना करने के लिए कामनाओं का त्याग करो।
- पुरुषार्थ के स्नेही बनो तो सर्व के स्नेही बन जाओगे।
- कर्म भोग पर विजयी बनने का साधन है "योगबल"
- व्यर्थ के चक्करों से बचने के लिए स्वदर्शन चक्र को याद करो।
- बीज रूप स्थिति में स्थित होकर संकल्प रूपी बीज डालो तो फल शीघ्र निकलेगा।
- जितनी परखने की शक्ति होगी उतना ही परीक्षाओं में पास होंगे।
- निश्चय-बुद्धि ही गले का हार है।
- स्वयं को जिम्मेवार समझा तो आलस्य और अलबेलापन समाप्त हो जायेगा।
- बीज में जिस प्रकार सारा वृक्ष समाया है उसी प्रकार आत्मिक स्मृति में परमात्म स्मृति स्वतः समाई हुई है, इसीलिए यह अभ्यास बढ़ाओ।
- ईश्वरीय बल को प्राप्त करने के लिए सम्पूर्ण बलि चढ़ना है

जगदीश चन्द्र, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्मप्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णा नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रैस, कृष्णा नगर, दिल्ली-५१ से छपवाया Regd. No. 10563/65-D,(E)-70. Laser Typesett by Samira Graphics, Krishna Nagar Delhi-51 Ph: 2248751.